ज्ञानामृत

दिसम्बर, 1986
वर्ष 22 ❋ अंक 6
मूल्य 1.50

माऊंट आबू: प्रोफेसर चिट्टी बाबू, उपकुलपति अन्नामलई विश्वविद्यालय, तथा अध्यक्ष भारतीय विश्वविद्यालय तथा डॉ. जगदीश नारायण, सचिव भारतीय विश्वविद्यालय संघ, डॉ. क्रिस्टो, महासचिव कामन वैल्थ विश्वविद्यालय संघ तथा २५ अन्य उपकुलपति पांडव भवन में पधारे। वे दादी प्रकाशमणि मुख्य प्रशासिका ब्र.कु. ई. विश्वविद्यालय तथा अन्य पांडव भवन निवासियों के साथ।

तीनसुकिया: में आयोजित 'विश्वशांति स्वर्णिम मेले' का उद्घाटन दृश्य। चित्र में दादी प्रकाशमणि जी मोहिनी बहिन, ब्र.कु. सत्यवती, आई.ओ.सी. के जनरल मेनेजर भ्राता बी.एन. दत्ता तथा अन्य दिखाई दे रहे हैं।

मुरादाबाद: भ्राता आर. चंद्रा, ज़िलाधिकारी ब्र.कु. मनोहर इंद्रा, ब्र.कु. रूकमणि तथा अन्य विश्वशांति मेले के उद्घाटन पूर्व शिव बाबा की याद में।

पोखरा: नेपाल के प्रधानमंत्री भ्राता मरीचमान सिंह श्रेष्ठ जी का एयरपोर्ट पर स्वागत करती हुई ब्र.कु. बहिनें।

मजलिस पार्क (दिल्ली): शिव दर्शन शांति मेले के सम्पन्न समारोह में सम्बोधन करती हुई ब्र.कु. दादी हृदय मोहिनी जी।

माउन्ट आबू: भ्राता मोहन नाग, उड़ीसा के माइनिंग जियोलोजी के राज्यमंत्री से ब्र.कु. दादी चंद्रमणि जी ज्ञान वार्तालाप करते हुए।

अहमदाबाद: शांति अभियान के अंतर्गत निकाली गई शांति साइकिल यात्रा का समाचार ब्र.कु. सरला, भ्राता मोरार जी भाई देसाई, पूर्व प्रधानमंत्री को सुनाते हुए।

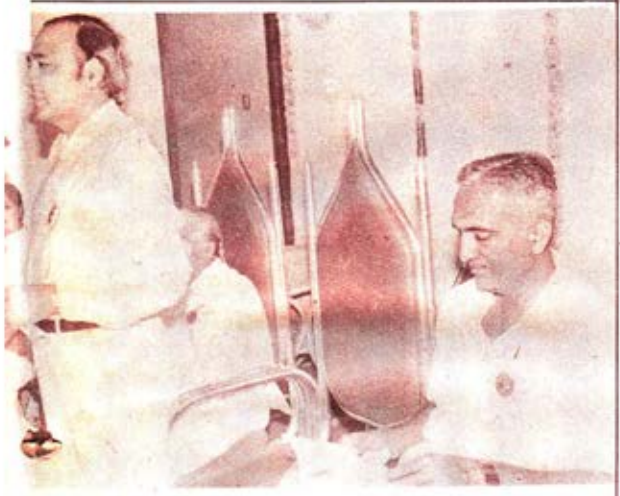

मद्रास: बी.के. चंदु महतानी आध्यात्मिक कार्यक्रम में 'स्वास्थ्य तथा शुद्ध विचार' पर बोलते हुए।

नेपाल के श्री ५ युवराजाधिराज ज्ञानेन्द्र वीर विक्रम शाह देव सरकार के भैरवा आगमन पर ब्र० कु० सावित्री जी उनका स्वागत करते हुए।

पुरी : ब्र० कु० निरुपमा चिन्तामणि पानीग्रही, भारत के केन्द्रीय मन्त्री को श्री लक्ष्मी नारायण का चित्र भेंट करते हुए।

न्यूयार्क: दादी प्रकाशमणि जी 'मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस अपील अभियान के प्रतिनिधि के रूप में संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव तथा उनकी धर्मपत्नी से भेंट करते हुए।

सान फ्रांसिसको: ब्र.कु. ऊषा 'मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस अपील' अभियान के उद्घाटन समारोह में प्रवचन करती हुई।

अमृत सूची

१. समर्पण बुद्धि	१	१०. भावना और विवेक	१३
२. समाज-सेवा	२	११. शांति का स्वरूप	१५
३. कारण चाहे कोई भी हो !	४	१२. छात्र-जीवन में शिक्षा का औचित्य	१७
४. बुद्धि का अहंकार—शक्तियों का क्षय-द्वार	५	१३. हम हैं दाता के बच्चे, मांग कुछ सकते नहीं ?	१९
५. पवित्रता वास्तविकता है ?	८	१४. क्या आत्मा और शरीर दो अलग सत्ताएं हैं ? स्वयं को शरीर मानने की भूल कैसे हुई ?	२१
६. सहकारात्मक आदि-सेवा के विविध स्वरूप	९	१५. नैया का खवैया कौन ?	२५
७. भगवान के नाम भक्त का पत्र	११	१६. सचित्र समाचार	२९
८. वह क्या है ?	११	१७. आध्यात्मिक सेवा-समाचार	३०
९. जीवन का आनंद और अंतर्मुखी व्यक्तित्व	१२		

समर्पण बुद्धि

समर्पण होना माना अपनी डोरी शिव बाबा के हाथ में देना। जैसे घोड़े की लगाम मालिक के हाथ में होती है तो बहुत संभलकर उसे चलाता है। बेलगाम घोड़ा कितनी ठोकरें खाता है। उसको पता नहीं चलता हम कहां जा रहे हैं। समर्पण बुद्धि माना अपनी डोरी परमात्मा बाप के हाथ में हो। बुद्धि की डोरी उसके हाथ में होगी तो कहां भी धक्का नहीं खायेंगे। बेलगाम घोड़े का हाल क्या होता है ? देखते ही डर लगता है पता नहीं कहां जायेगा। यदि भगवान के हाथ में हमारा मन है, समर्पण बुद्धि है तो वह बहुत प्यार से चलाता, बहुत प्यार से मालिश करता है। अपने घोड़े की वैल्यु को बढ़ाता है। वह मालिक की नज़रों में रहता है। सबको दिखाता है देखो मेरा घोड़ा कितनी अच्छी रेस करता है, कितना होशियार है। बेलगाम घोड़ा व्यक्ति और वैभवों के पीछे भटकता रहता है और जिसकी लगाम मालिक के हाथ में है वह बड़े आनंद से त्रिलोकी, त्रिकालदर्शी बन चक्कर लगाता रहता। तो सद्गति दाता सतगुरु के हाथ में अपनी डोरी दे दो। उसके हाथ में डोरी है तो बहुत अच्छी सद्गति होगी। जिसका घोड़ा अच्छा मस्त होता उस मालिक को भी बहुत नशा रहता है, उस मालिक का चेहरा देखो—वह घोड़ा गाड़ी देख खुश होता रहता। सुबह-सुबह गाड़ी को भी चमका देता और घोड़े की भी मालिश कर देता और फिर मालिक होकर सवारी भी कर लेता। तो मन बुद्धि रूपी घोड़े की लगाम बाप के हाथ में दे दो यही है समर्पण होना। □□□

पुरी: ब्र.कु. जगदीशचंद्र, मुख्य प्रवक्ता ब्र.कु.ई. विश्वविद्यालय गजपति महाराजा, दिव्यासिंह देव, पुरी से ज्ञानचर्चा करते हुए।

सम्पादकीय

समाज-सेवा

कई बार जब कहीं समाज-सेवी लोग या पत्रकार या राजनीतिक नेता हमसे मिलते हैं तो वे पूछते हैं कि यह ईश्वरीय विश्वविद्यालय पिछड़े वर्ग की तथा निर्धनों की निर्धनता दूर करने के लिए क्या सेवा कर रहा है । कुछ लोग यह भी पूछते हैं कि गांव तथा आदिवासी क्षेत्रों में आप लोग क्या सेवा कर रहे हैं । ये पूछने के पीछे उनका भाव यही प्रतीत होता है कि वे यह जानना चाहते हैं कि जो दलित जातियां, शोषित-वर्ग या गांव में रहनेवाले अथवा मज़दूर लोग हैं, उनके आर्थिक स्तर को ऊंचा करने के लिए ईश्वरीय विश्वविद्यालय कहां तक सक्रिय है ?

प्रश्न करनेवाले ये लोग एक मूल बात तो यह भूल जाते हैं कि यह एक आध्यात्मिक शिक्षा-संस्थान है और इस संस्थान का कार्य-क्षेत्र मनुष्य को चरित्रवान और शांतियुक्त नागरिक बनाना है और उसके आध्यात्मिक पहलू का विकास करते हुए उसे बुराइयों से मुक्ति दिलाना तथा जीवन की पहेली को हल करके परमपिता परमात्मा के आनंद रूपी गुण का अनुभव कराना है। गांव-गांव या आदिवासी-क्षेत्रों में जाकर लोगों को कोई व्यवसाय प्राप्त कराना या उन्हें कोई स्थूल साधन देना नहीं है । वो कार्य करनेवाली संस्थाएं तो अनेक हैं । प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की शिक्षाओं से निर्धनता, अपराध, अस्वस्थता और अशांति इत्यादि के कम होने में एक बहुत बड़ा सहयोग तो अवश्य मिलता है क्योंकि अस्वस्थता, निर्धनता और अशांति का एक मुख्य कारण मनुष्य की कोई चारित्रिक त्रुटि, वैचारिक गरीबी, और आध्यात्मिक कमी ही है, परंतु फिर भी इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य तो आध्यात्मिक चरित्रात्मक तथा नैतिक निर्धनता ही को दूर करना है । देखने की बात यह है कि इस कार्य-क्षेत्र में यह संस्थान कितना सफल हुआ है ?

एक ओर तो लोग हमें यह कहते हैं कि गांव और आदिवासियों की सेवा होनी चाहिए । और दूसरी ओर जब हम अपराध के आंकड़े देखते हैं तो हमें मालूम होता है कि अनुपातत: नगरों में अपराध अधिक होते हैं और महानगरों में उससे भी अधिक । गांव तथा आदिवासी-क्षेत्रों में कई ऐसे अपराध शायद होते ही नहीं जो बड़े-बड़े नगरों में होते हों । तब प्रश्न उठता है कि नैतिक व आध्यात्मिक सेवा की आवश्यकता नगरों में अधिक है या गांवों में । चरित्र अथवा नैतिक मूल्यों की शिक्षा देना गांवों में ज्यादा जरूरी है या नगरों में । स्कूलों एवं कॉलेजों में अनुशासनहीनता, उच्छृंडखलता, नशीले पदार्थों का सेवन, कन्याओं-बहनों से छेड़छाड़, राजनीतिक हल्ला-गुल्ला और धड़ेबाज़ी, पुलिस और बस कर्मचारियों के साथ आमना-सामना, अध्यापकों, आचार्यों और उपकुलपतियों के घेराव, गांव और आदिवासी-क्षेत्रों में अधिक हैं या नगरों में । कारखानों की तालाबंदी, कर्मचारियों और कारखानों के व्यवस्थापकों में तनाव, बैंकों में डाके, छुरेबाजी, मद्यपान, टैक्सों की चोरी, कालेधन पर आधारित व्यापार, दहेज़ की बात लेकर पत्नी को जला देना, शादियों पर व्यर्थ ही लाखों रुपये लगा देना, होटल, सिनेमा और टी.वी. कल्चर का प्रभाव शहरों में अधिक है अथवा आदिवासी-क्षेत्रों में । अवश्य ही इसका उत्तर होगा कि दिनोंदिन शहरों में गिरावट अधिक होती जा रही है । अत: आध्यात्मिक, नैतिक एवं शांतिवर्द्धक शिक्षा की आवश्यकता इन्हीं स्थानों पर अधिक है । यहां ही लोगों का जीवन अधिक कृत्रिम और तनावपूर्ण होता जा रहा है । यहां ही लोगों में स्वार्थ ज़्यादा है और भाईचारा, स्नेह तथा सहानुभूति कम । यहां ही लोगों की जनसंख्या अधिक है और यातायात के साधन तथा संचार एवं सम्पर्क के प्रसाधन (Means of Communication) अधिक सुलभ हैं; इसलिए यहां अधिक लोगों की आध्यात्मिक सेवा सहज ही हो सकती है। समाचारपत्रों के प्रकाशन स्थान, रेडियो और टी.वी. द्वारा प्रसार के कार्यालय, राजनीतिक दलों के मुख्यालय, व्यापार और उद्योग की गर्मागर्मी, नीति-निर्धारण, प्रशासन के कार्य योजना और उसकी क्रियान्विति के दफ्तर सब यहीं हैं । गांव में भी अनैतिकता और चारित्रिक हानि तथा अपराध तो हैं ही परंतु अनेक प्रकार के महाअपराध, भ्रष्टाचार, चारित्रिक पतन और अनैतिकता की ये ज़ोरदार आंधी अथवा टाइफून शहरों से गांवों की ओर बढ़ रहा है । अत: आवश्यकता इस बात की है कि पहले यहां की स्थिति को ठीक किया जाए जहां से देश के प्रशासन के कार्य होते हैं, विधि-विधान बनते हैं, नये रिवाज़ और फ़ैशन शुरू होते हैं । आज स्थिति ऐसी है कि शहरों को ठीक किये बिना ग्राम ठीक नहीं हो सकते । फिर शहरों में पत्रों-पत्रिकाओं, पुस्तकों-पुस्तिकाओं, प्रदर्शनियों और मेलों, संगोष्ठियों और सम्मेलनों के द्वारा काफी लोगों को प्रेरणा देने का कार्य किया जा सकता है । यहां से देश-विदेश में पवित्रता का संदेश पहुंचाना सहज है क्योंकि नगरों और महानगरों के समाचार दूर-दूर तक जाते हैं ।

इसका अर्थ यह नहीं कि यह ईश्वरीय विश्वविद्यालय गांवों या उपनगरों की सेवा नहीं करता। गांववाले अधिक आस्थावान, स्नेही और सरल स्वभाव के होते हैं, उन्हें आध्यात्मिक अथवा नैतिक शिक्षा से लाभांवित करना अति सहज है। वहां के लोगों में इसमें अधिक रूचि भी है। बहुत ही कम खर्च से और कम मेहनत से उन्हें ज्ञान और योग से परिचित कराया जा सकता है। इसलिए यह ईश्वरीय विश्वविद्यालय वहां तो अपनी ही रूचि से कार्य करता ही है परंतु वहां इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के बड़े-बड़े सेवा स्थानों की आवश्यकता नहीं बल्कि वहां की आध्यात्मिक सेवा की व्यवस्था इस प्रकार है कि उन ग्रामों के निकटवर्ती नगरों अथवा उपनगरों में जो सेवा स्थान हैं, वहां की शिक्षिका बहनें अथवा सहयोगी भाई कुछ-कुछ दिनों के बाद वहां किसी निश्चित स्थान पर (जोकि उसी गांव के किसी निवासी के निवास स्थान पर ही एक-दो कमरों के रूप में होता है) जाकर वहां आध्यात्मिक शिक्षा दे आती हैं और हर सप्ताह अथवा महीने में एक-दो बार गांव के कुछ लोग भी उन उपनगरों अथवा नगरों के सेवाकेंद्रों में शिक्षा लेने आते हैं। इसलिए ईश्वरीय विश्वविद्यालय के सेवा स्थानों की जो सूची छापी जाती है, उसमें उनके पते नहीं दिये होते। पते न देने का एक कारण यह भी होता है कि इन सभी को छापने से सूची बहुत बड़ी हो जाती है और दूसरे इनको छापने की इसलिए भी आवश्यकता नहीं कि नगर अथवा उपनगर के केंद्र का पता छप जाने पर निकटवर्ती गांव के कक्षा स्थल का पता उन्हीं से लिया जा सकता है। अन्यश्च इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की पत्रिकाओं में भी उन ग्रामों में हुए आयोजनों के समाचार और फ़ोटो प्रायः नहीं छपते क्योंकि वहां की जनसंख्या कम होने के कारण वहां आयोजन छोटे होते हैं और वहां कोई अतिविशिष्ट व्यक्ति (V.I.P.) उन आयोजनों में नहीं सम्मिलित होते और इस कारण इस संस्था के १५०० से अधिक क्रियारत सेवा स्थानों और सेवा उपकेंद्रों से जो सेवा समाचार, पत्र और फ़ोटोज़ आते हैं, उनकी छटाई करने तक गांव के समाचार व फ़ोटो रह जाते हैं जिससे लोग शायद यह गलत समझ लेते हैं कि इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा गांवों की सेवा होती ही नहीं।

वास्तविकता तो यह है कि गांव की सेवा के यहां विशेष प्रोग्राम बनाए जाते हैं। उदाहरण के रूप में सन् १९८५ को जब अंतर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के रूप में मनाया गया था तब देश की हर दिशा से इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के कई बहन-भाइयों ने सेवा संगठन बनाकर सैकड़ों-हज़ारों ग्रामों की सेवा की। और अब भी गांव की सेवा काफी रूचि से की जाती है।

आदिवासी लोगों की तो भाषा ही एक कठिन समस्या है तथापि इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की यह रूचि है कि वहां तक पहुंचने की यदि व्यवस्था हो सके और कोई सेवा स्थान उपलब्ध हो तो उन लोगों को भी आध्यात्मिक लाभ दिया जा सके। फिर भी कुछ राज्यों में ईश्वरीय विश्वविद्यालय के केंद्र आदिवासी इलाकों में भी ईश्वरीय सेवा कर रहे हैं।

हमारा यह मन्तव्य है कि यदि प्रश्न करनेवाले समाज-सेवी, पत्रकार या राजनीतिज्ञ इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के कार्य के सुफल को जानने का यत्न करें तो वे निश्चय ही इस निर्णय पर पहुंचेंगे कि इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की शिक्षा के फलस्वरूप स्वास्थ्य लाभ होने से पहले जो औषधि पर खर्च होता था, वह बच जाता है। धूम्रपान, मद्यपान, नशीले पदार्थों के सेवन, व्यर्थ रस्मों, फैशन और दिखावे पर जो व्यय या अपव्यय होता था, वह भी अब नहीं होता। होटल और मोटल में ज़बान के चस्कों तथा पान, आदि पदार्थों पर होनेवाले खर्च से भी मनुष्य छुट्टी पा लेता है। इस प्रकार इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की शिक्षा एक प्रकार की बचत स्कीम है, जो मनुष्य को सादा और कम खर्चीला बनाती है। इससे गरीब की गरीबी भी कुछ कम हो जाती है। साथ-साथ यहां आनेवाले लोगों में जब सहानुभूति, उदारता तथा अन्य मानवी मूल्यों का विकास होता है तब वे अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के प्रति भी सहानुभूति, सहिष्णुता और मानवता का व्यवहार करते हैं और उनकी शोषण प्रवृत्ति मिटकर उनमें आत्म-शुद्धि आने लगती है। इससे भी निर्धनता के कई कारणों का निराकरण हो जाता है।

वास्तव में निर्धनता का समूल अंत करने के लिए आध्यात्मिक शिक्षा ही अमोघ शस्त्र है अथवा अचूक औषधि है। यदि निष्पक्ष भाव से देखा जाये तो आज लाखों संस्थाओं के अन्यान्य रीति से समाज-सेवा के कार्य करने पर भी निर्धनों की संख्या तो बढ़ ही रही है। निर्धनता, रोग, हिंसा, भ्रष्टाचार, जनसंख्या में अति-वृद्धि, मानसिक तनाव आदि-आदि जितने भी आज दुःख एवं अशांति के कारण आज समाज में हैं, उनमें से हरेक को अलग-अलग करके उनका समाधान तो किया ही नहीं जा सकता। ये सभी तो एक ही विषैले वृक्ष की अनेक शाखाएं हैं। इनके समूलोच्छेदन की आवश्यकता है। इनका जन्म ही अनैतिकता रूपी सड़ांध से होता है—जैसे कि मक्खी, मच्छर, तिलचट्टा आदि गंदगी में ही जन्म लेते, पलते और बढ़ते हैं। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में दी

जानेवाली शिक्षा ऐसी अमृतधारा अथवा संजीवनी बूटी है जो एक-दूसरे से संबद्ध इन सभी सामाजिक रोगों का निवारण करती है । वास्तव में यहां की शिक्षाएं ही सही अर्थ में सेवा है जिनसे एक उज्ज्वल, सच्चरित्र, सुसंस्कृत समाज का नव निर्माण होता है और शकुनवाद (Superstition), कुरीतियों, भ्रष्टाचार, दुर्व्यवहार, अत्याचार, अनाचार, अमर्यादा, अभद्रता, असभ्यता और आसुरीयता का मलियामेट करके सर्व जन हिताय: सर्व जन सुखाय: एक नयी सामाजिक व्यवस्था का सूत्रपात होता है। □□□

—जगदीश

"कारण चाहे कोई भी हो"

□ब्र.कु. राजकुमारी, मज़लिस पार्क., देहली

बात छोड़ो, पाप छोड़ो,
बात करनेवाले 'आप' छोड़ो,
पर शिव बाप को न छोड़ना।

कारण चाहे कोई भी हो,
ज्ञान से न मुंह मोड़ना।

संग छोड़ो, बाहरी रंग छोड़ो,
ञंक छोड़ो, अपनों से जंग छोड़ो।
पर उमंग-उत्साह को न छोड़ना,
कारण चाहे कोई भी हो।
पर शिव बाप को न छोडना।।

ईर्ष्या छोड़ो, व्यंग्य छोड़ो,
शेष छोड़ो, जोश छोड़ो,
पर रूहानी होश न छोड़ना।

कारण चाहे कोई भी हो।
शिव बाप को न छोड़ना।।

मान छोड़ो, शान छोड़ो,
देहों का अभिमान छोड़ो।
पर ईश्वरीय आन को न छोड़ना,

कारण चाहे कोई भी हो।
पर शिव बाप को न छोड़ना।।

जन छोड़ो, धन छोड़ो,
पर छोड़ो, पर चिंतन छोड़ो,
पर शिव बाप को न छोड़ना।

बाप-दादा का वर्सा नहीं छोड़ना,
कारण चाहे कोई भी हो।
पर शिव बाप को न छोड़ना।। □□□

अमृतसर: में शांति यात्रा का दृश्य

लातूर: बसवेश्वर मंगल कार्यालय में जनता को संबोधित करती हुई ब्र.कु. नीरा, साथ में ब्र.कु. पंचमसिंह और ब्र.कु. प्रेम भाई विराजमान है।

बुद्धि का अहंकार— शक्तियों का क्षय-द्वार

□बी.के. सूरज कुमार , माउंट आबू

विश्वामित्र ने महर्षि वशिष्ठ को परास्त करने के लिए वर्षों तक कठोर तप किया । परंतु वह महान तपस्वी ईश्वरीय शक्तियों से सम्पन्न न बन सका । उसने तपस्या के द्वारा अनेक अस्त्र-शस्त्र प्राप्त किये, परंतु वह बलवान न बन सका । राक्षस उसके यज्ञ में विघ्न डालते रहे, वह उनका संहार न कर सका । इसका कारण क्या था ? मनोवृत्ति में अहंकार का भाव और प्रतिद्वंदता का भाव, जिसने उसे निष्काम योगी नहीं बनने दिया, फलतः उसकी एकत्रित शक्तियां नष्ट होती रहीं, अनेक बार उसे हार का मुंह देखना पड़ा । कहना असत्य न होगा कि वह महान तपस्वी सफल नहीं हुआ ।

स्वयं योगेश्वर भगवान द्वारा सिखाये गये राजयोग का अभ्यास करनेवाला तपस्वी, चाहे कितनी भी कठिन तपस्या करे, परंतु यदि उसमें सूक्ष्म अपवित्रता की वृत्ति और बुद्धि का अह नष्ट नहीं होता, तो ये दोनों ही कमजोरियां शक्तियों का क्षय द्वार बन जाती हैं । और अनेक बार मनुष्यात्मा स्वयं को माया से हारी हुई अनुभव करती है और समय पर निर्बल महसूस करती है । प्रस्तुत चर्चा में हम बुद्धि के अहंकार का विश्लेषण करेंगे ताकि स्वयं को सूक्ष्मता से चैक कर सकें, इसका दर्पण बनाने का प्रयास भी करेंगे ।

बुद्धि आत्मा की विवेक-शक्ति है—

बुद्धि विवेक-शक्ति है, इसी के द्वारा संकल्प-शक्ति पर नियंत्रण किया जाता है । योगाभ्यास में जब मनुष्य अशरीरी बनकर सर्वशक्तिवान से बुद्धि को जोड़ता है तो बुद्धि में शक्तियों का प्रवाह प्रवेश करने लगता है और बुद्धि शक्तिशाली हो जाती है । बुद्धि का शक्तिशाली बनना ही आत्मा का शक्तिशाली बनना है । परंतु शक्तिशाली बुद्धि यदि दिव्य नहीं है तो मनुष्य अपनी बुद्धि का दुरुपयोग करने लगता है और उसमें अहंकार प्रवेश कर लेता है । इससे बुद्धि कमजोर होने लगती है और मन पर अपना नियंत्रण खो देती है । फलस्वरूप मन स्वछंद हो जाता है, जोकि अशांति और तनाव का कारण बनता है ।

दिव्य बुद्धि ही दिव्य जीवन का निर्माण करती है । बुद्धि तो सभी के पास है, परंतु कोई उसका प्रयोग जीवन को दिव्य बनाने में करता है और कोई उसमें अहंकार का समावेश कर अपने व दूसरों के जीवन में बाधाएं उत्पन्न कर देता है। तो यह अहंकार ही पवित्र आत्माओं के जीवन में सबसे बड़ा रोड़ा है, अतः इस छुपे चोर को पहचानकर नष्ट कर देना चाहिए ।

अहंकार से हानियां—

● अहंकारी मनुष्य की बुद्धि का विकास नहीं होता— क्योंकि वह सदा ही इस नशे में रहता है कि मैं तो सब-कुछ जानता हूं । उसमें सीखने की भावना नहीं रहती । फलतः उसकी बुद्धि का विकास रुक जाता है । वास्तव में सब-कुछ जान लेने के बाद तो मनुष्य संपूर्ण हो जाता है । जब तक अपूर्णता है, मनुष्य को सीखने के द्वार खोलकर रखने चाहिएं।

● अहम् मनुष्य को महान नहीं बनने देता— अहम् मनुष्य की महानताओं में विष तुल्य है, अहम् मनुष्य की महानताओं के चारों ओर मानो धूल की छत्र-छाया लगा देता है । आज चारों ओर अनेक विद्वान व तपस्वी नज़र आते हैं, परंतु अहम् के कारण, समाज पर उनकी महानताओं की छाप नहीं पड़ने पाती । यही कारण है कि मनुष्य की आस्था उनमें कम होती जा रही है ।

● अहंकारी मनुष्य अयोग्य होते हुए भी प्रतिद्वंदी बनकर रहता है । प्रसिद्ध उदाहरण है— महात्मा बुद्ध के साथ देवदत्त का । उसने जीवन-भर महात्मा बुद्ध के साथ प्रतिद्वंदता की, संघ को तोड़ा । परंतु आज महात्मा बुद्ध विश्वप्रख्यात हैं और देवदत्त को कोई याद भी नहीं करता । इस प्रतिद्वंदता में अहंकारी मनुष्य को सदा ही हार का मुंह देखना पड़ता है । अतः यह कहना उपयुक्त होगा कि **जहां अहंकार है वहीं हार है** । अहंकार आते ही मनुष्य को हार अनुभव होती है । साथ-ही-साथ देवदत्त की ही तरह ऐसे अहंकारी मनुष्य का जीवन भी आत्म-ग्लानि से भरपूर रहता है और उसका अंत भी ग्लानिपूर्ण ही होता है ।

● अहंकारी मनुष्य को स्वप्न में भी सुख-शांति भासित नहीं होती । क्योंकि अहंकार परस्पर टकराव का कारण बनता है और जब कभी लोग उसके अहंकार को ठेस पहुंचाते हैं वह आत्म-संयम खो बैठता है । फलस्वरूप वह जलता-भुनता

रहता है और अपनी अमूल्य निधि सुख-शांति को जलाकर राख कर देता है।

●अहंकारी मनुष्य का चित्त कभी भी स्थिर नहीं रहता। चाहे वह योगाभ्यास में कितनी भी एकाग्रता का अभ्यास क्यों न करे, उसकी एकाग्रता हठपूर्वक तो हो सकती है, परंतु ज्ञान-बल से नहीं। क्योंकि गुह्य ज्ञान अहंकारी बुद्धि से तत्काल ही फिसल जाता है। उसे सभी अल्पज्ञानी व अवगुणी नज़र आते हैं। "मैं ही सब-कुछ हूं"—यह आभास उसे सत्य की शक्ति का आभास नहीं होने देता।

●अहंकारी मनुष्य बहुत बातूनी होता है, क्योंकि वह हर जगह अपनी होशियारी दिखाने को आतुर रहता है। इस अभिमान के कारण उसे कई जगह अपमान भी देखना पड़ता है। इस प्रकार बाह्यमुखी हुआ योगी अपनी सूक्ष्म-शक्तियों को नष्ट करता रहता है। और यही कारण है कि कोई भी अन्य व्यक्ति उसे योगी कहने को तैयार नहीं होता।

●यह एक अत्यंत सूक्ष्म सत्य है कि बुद्धि का अहंकार कई विघ्नों का कारण है तथा यह विघ्नों का आह्वान करनेवाला भी है। इस सत्य को सूक्ष्मता से अनुभव करने की आवश्यकता है। अत: अहंकारयुक्त मनुष्य अनेक बार स्वयं को विघ्नों से घिरा हुआ पाता है। परंतु वह इसका कारण नहीं समझ पाता। इस अहंकार का ही दूसरा स्वरूप मैं-पन भी है। और यह मैं-पन का बोझ ही मनुष्य को सरलचित्त होकर उड़ने नहीं देता।

अहंकारी मनुष्य का भविष्य अंधकार में—

प्रत्येक मनुष्य में कुछ-न-कुछ अंश अहंकार का रहता ही है। ज्ञानी आत्मा का कर्तव्य है इस अहम् को पहचानना, कि जीवन में अहंकार कहां-कहां कार्यरत है और फिर उसे निकालना। यदि ज्ञान-योग का पथिक इस सूक्ष्म अहंकार को नहीं परख पाता तो सतत् उसकी शक्तियों का ह्रास होता रहता है और उसका भविष्य गहन अंधकार में प्रवेश कर जाता है।

●अहंकारी मनुष्य सभी का स्नेह व सहयोग खो देता है। अंतत: वह स्वयं को अकेला ही पाता है। कोई भी उसके समीप नहीं जाना चाहता। वास्तव में अहंकार ही संगठन की शक्ति को तोड़ता है। फलत: कार्यक्षेत्र में कठिनाइयां बढ़ जाती हैं और छोटे-छोटे कार्य करने में भी काफी शक्ति तन, मन व धन की व्यय होती है।

अहंकारी मनुष्य के लक्षण—

●अहंकारी मनुष्य अपने को बहुत ही बुद्धिमान व सभ्य मानता है और यही उसकी **अल्पज्ञता** है।

अत: यदि हमारी बुद्धि तेज़ है तो हम उसका उपयोग जीवन को दिव्य बनाने में करें—यही बुद्धिमानी है। हमारी तेज़ बुद्धि हमारे ही पतन का कारण न बने। हमारी तेज़ बुद्धि संगठन के बिखराव का कारण न बने, ईश्वरीय कार्य में विघ्न न बने, किसी में असहयोग की भावना जागृत न करे, किसी को प्रभु पात्र बनने से विच्छेद न कर दे—यही ध्यान देना बुद्धि की श्रेष्ठता है।

●अहंकारी मनुष्य कभी भी अपनी गलती को स्वीकार नहीं करता और यही उसकी सबसे बड़ी **गलती** है।

●अहंकारी मनुष्य कभी भी दूसरों की महानताओं को स्वीकार नहीं करता क्योंकि उसका मन ईर्ष्या-द्वेष से भरा रहता है, फलस्वरूप वह दूसरों का अपमान करता रहता है—और यही उसकी **नीचता** है।

●अहंकारी मनुष्य दूसरों की नहीं, सदा अपनी ही महिमा करता है। क्योंकि दूसरे तो कभी भी उसकी महिमा नहीं करते। वह सदा **मैं-मैं** करता है।

●अहंकारी मनुष्य स्वयं को पूर्ण ज्ञानी समझता है और यही उसका **पूर्ण अज्ञान** है।

●अहंकारी मनुष्य ज़िद्दी स्वभाव का होता है और यही उसकी सबसे गलत **विधि** है।

●अहंकारी मनुष्य चिड़चिड़ा रहता है व डिस्टर्ब होता रहता है—और यही उसको **सज़ा** है।

●अहंकारी व्यक्ति सदा ही अपने अधिकारों का दुरुपयोग करता है। वह अपने अधिकारों से दूसरों को सुख नहीं देता और यही उसके **पतन** का कारण है।

●अहंकारी मनुष्य थोड़ी-सी ही प्राप्ति को सर्वोच्च प्राप्ति मान लेता है। "**चूहे को मिली हल्दी की गांठ और बन बैठे पंसारी**"—यह कहावत ऐसे मनुष्य के लिए ही है।

●अहंकारी मनुष्य दूसरों की राय को महत्व नहीं देता। वह कहता है—"**तुम हमें क्या सिखाओगे।**"

●अहंकारी मनुष्य दूसरे की महिमा सहन नहीं कर पाता, फलस्वरूप उसके कटु मुख से **कटुवचन व टीका-टिप्पणी** के विषधर ही उगले जाते हैं।

बुद्धिमान कौन ?

बुद्धि प्रत्येक प्राणी को प्राप्त है, परंतु किसी को कम, व

किसी को ज्यादा । किसी की बुद्धि में भोलापन है, व किसी की बुद्धि में चातुर्य, किसी की बुद्धि कमजोर है और किसी की बुद्धि शक्तिशाली । परंतु ज्ञानी पुरुष वही है जो अपनी बुद्धि को ज्ञान व पवित्रता के बल से दिव्य बना देता है ।

जो व्यक्ति बुद्धिमान होते हुए भी निरहंकारी है—**वही बुद्धिमान है** । जैसे परमात्मा ज्ञान-सागर व बुद्धि का दाता व सर्वेसर्वा होते हुए भी पूर्ण निरहंकारी है और जैसे ब्रह्मा बाबा भी सर्वश्रेष्ठ बुद्धिवान होने पर भी पूर्ण निरहंकारी बने, उन्होंने अपने बोल व कर्म से कभी नहीं दर्शाया कि वे बुद्धिवान हैं, इसीलिए तो वे सर्वप्रथम दिव्य विवेक प्राप्त कर संपूर्ण बनें ।

वास्तव में बुद्धिवान मनुष्य वही है जो बुद्धि बल से विपत्ति अपने पर भी अपनी स्थिति को अचल अडोल बनाये रखे और अपनी बुद्धि को परमपिता पर स्थिर कर सके । जो किसी भी परिस्थिति में अपनी **बुद्धि को विचलित न होने दे**—ऐसे पुरुष को ही दूसरे लोग बुद्धिमान मानते हैं ।

जो व्यक्ति सदैव दूसरों की भलाई में अपनी भलाई देखे, अपने व्यवहार को नम्र व सभ्य बनाकर रखे, कभी किसी को पीछे न धकेले, दूसरों की उन्नति देख गद्गद् हो तथा संगठन को धैर्य-चित्त होकर एकता के सूत्र में बांधे रखे—वही बुद्धिमान है ।

जो मनुष्य आये हुए प्रभु को पहचानकर उस पर कुर्बान हो जाए, समय अनुसार उसकी प्रेरणाओं को पकड़कर मग्न हो जाए, वरदानी समय का संपूर्ण लाभ उठाये, अपने भाग्य को सर्वश्रेष्ठ बना ले, तथा प्रभु से सर्वस्व प्राप्त कर स्वयं को संतुष्ट कर ले—वही बुद्धिमान है ।

अतः यदि हमारी बुद्धि तेज़ है तो हम उसका उपयोग जीवन को दिव्य बनाने में करें—यही बुद्धिमानी है। हमारी तेज़ बुद्धि हमारे ही पतन का कारण न बने। हमारी तेज़ बुद्धि संगठन के बिखराव का कारण न बने, ईश्वरीय कार्य में विघ्न न बने, किसी में असहयोग की भावना जागृत न करे, किसी को प्रभु पात्र बनने से विच्छेद न कर दे—यही ध्यान देना बुद्धि की श्रेष्ठता है ।

भगवान निरहंकारी तो उसके बच्चे अहंकारी क्यों!

तो आओ हम ज्ञानस्वरूप आत्माएं जीवन से इस बुद्धि के अहम् का प्रतिकार करें । हम अर्जुन की तरह भूल न जाएं कि मैंने इतना भयंकर महाभारत जीता । सर्वविदित है कि जब ईश्वरीय शक्ति उससे अलग हो गई तो भीलों ने ही उसे परास्त करके लूट लिया । अतः हमारा महत्व तभी है जब हम योगयुक्त हों अर्थात् ईश्वरीय शक्तियां हमसे जुड़ी हों ।

अब समय है शीघ्रता से जीवन को संपूर्ण दिव्य, निर्मल व शीतल बनाने का, इस सूक्ष्म शत्रु को, जोकि ईश्वरीय मार्ग पर विषधर तुल्य है—पहचानने का । इसे आवश्यक न समझें और मन से इसका प्रतिकार करें क्योंकि अहंकार मनुष्य के श्रृंगार को बिगाड़ देता है, भगवान के बच्चों को यह शोभा नहीं देता । इसे निकालकर ही हम संपूर्ण निरहंकारी बनकर बाप समान सर्वोच्च स्थिति को प्राप्त कर सकेंगे तथा प्रत्यक्षता का सुनहरा झंडा विश्व में फहरा सकेंगे । □□□

भरतपुर: बी.के. कविता आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन पश्चात् श्रीमती मीनाक्षी हूजा, आई.ए.एस., जिलाधीश भरतपुर, को ईश्वरीय सौगात देते हुए ।

धर्मशाला: में विश्वशांति कार्यक्रम में भ्राता फकीरचंद कहोल जिला न्यायाधीश अपने विचार प्रकट करते हुए।

पवित्रता वास्तविकता है

□ब्र.कु. उर्मिला, चण्डीगढ़

बहुत से भाई बहन अब प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के सम्पर्क में आते हैं, और उन्हें यहाँ के लक्ष्य यानि मन, वचन, कर्म की पूर्ण पवित्रता के बारे में बताया जाता है तो उनमें इस बात को स्वीकार करने में एक झिझक सी महसूस होती है। बिना प्रतिक्रिया दर्शाए कुछ सुन लेते हैं और कुछ पूछ भी लेते हैं, यह कैसे सम्भव है ? हमारे ये बहन भाई सुबह शाम ईश्वरीय ज्ञान का श्रवण भी करते हैं, जीवन में सुख-शांति के अनुभव का सही मार्ग भी इसे मान लेते हैं परंतु पवित्रता की बात में संशयबुद्धि होने के कारण उत्तरोत्तर आध्यात्मिक रेस में तन मन को आप्लावित नहीं कर सकते।

इस प्रश्न के समाधान के लिए आइये हम सृष्टि-चक्र के चारों युगों की फेरी पहनें कि 5000 वर्ष के इस कालचक्र में हम पूर्ण पवित्रता की अवस्था में ज्यादा रहते हैं या अपवित्रता में ? सृष्टि के प्रारम्भ काल में सतयुग और त्रेता अर्थात् 2500 वर्ष हम मनसा वाचा कर्मणा पावन हैं। बाद के 2500 वर्षों में हमारे में अपवित्रता घुसती है इसमें कोई संदेह नहीं है, परंतु औसत निकालने पर हम पाएंगे कि इन 2500 वर्षों का मुश्किल से आधा समय ही हम अपावन कृत्य में लिप्त होते हैं। क्योंकि एक शरीर छोड़ने और दूसरा धारण करने के बीच का समय, बाल्यकाल में गुजरने वाला हमारा समय विकारों से परे होता है। इस प्रकार निष्कर्ष रूप में चारों युगों में पवित्रता का पलड़ा ही भारी है। परन्तु मनुष्य की अवस्था उस अबोध बच्चे जैसी है जो रात्रि के कालान्धकार को देखकर सुबह की रोशनी की आशा छोड़ बैठा है और बार-बार मां से पूछता है कि सचमुच दिन निकल आएगा, और मां द्वारा ही किये जाने पर भी आशा और निराशा के बीच झूलता रहता है।

कई भाई बहनों का यह भी कथन होता है कि पवित्रता अवास्तविकता है और अपवित्रता वास्तविकता है। परंतु हमें ध्यान रहे कि वास्तविक चीज़ सदा रहने वाली होती है। लेकिन अपवित्रता तो क्षणिक है। जीवन का प्रथम चरण विकारों से रहित व्यतीत करने के बाद आगे के जीवन में हम कितने भी काम क्रोध में फँस जाएँ, पर अगला जन्म लेते ही सारे संस्कार आत्मा में से धूमिल हो जाते हैं और फिर हम सात्विक फूल की तरह सृष्टि की बगिया में महकने लगते हैं। जब प्रकृति की एक स्वाभाविक क्रिया से विकारों का लोप हो जाता है और रोजमर्रा के जीवन में हमारी आँखों के सम्मुख हो रहा है तो पिता परमात्मा प्रदत्त इस ज्ञान और राजयोग को जीवन के थोड़े से बचे हुए समय में धारण करने से कुसंस्कार समूल नष्ट हो जाएंगे इसमें क्या संदेह है ?

किसी भी बनावटी वस्तु को प्राप्त करने में मेहनत नहीं करनी पड़ती वह तो अनचाहे रूप में हमारे पास आ टपकती है जैसे कपड़ों पर लगी धूल। इसी प्रकार बुराइयों को, विकारों को हमने कभी नहीं चाहा, कभी नहीं बुलाया कि विकारो, आओ और आकर हमें दुःख दो। ये तो बिना बुलाए मेहमान हैं। इसके विपरीत इनको समाप्त करने वाले कामारि भगवान शिव को हम अवश्य पतित-पावन कहकर बुलाते आए हैं। द्वापर युग में कुसंस्कार बड़े सूक्ष्म रूप से, बिना मेहनत के, अपने आप हमारे में घुसना शुरू कर देते हैं और इनकी अधिकता से खिन्न होते ही हम इनको तिलांजली दे देते हैं।

अपवित्रता उस बनावटी वस्तु की तरह है हाथ लगाते ही जिसकी चमक समाप्त हो जाती है। भले हमने सकुचाते, घबराते विकार जाल में अपने को फँसा लिया था परंतु परमात्म ज्ञान की झलक मिलते ही हम इसकी ऊपरी चकाचौंध से पलभर में दूर हो जाते हैं, जैसे कभी जाना भी नहीं था, देखा भी नहीं था। अगर यह शुद्ध और वास्तविक होती तो हम इसे न छोड़ पाते, न इसे तिलांजलि देकर सुख की अनुभूति करते और न ही हमारे पथ-प्रदर्शक शास्त्रों में यह उल्लेख होता कि काम, क्रोध, लोभ... नरक के द्वार हैं या इंद्रियों का रस ही सभी दुःखों का कारण है।

परंतु आज मनुष्य उलझन में है। जैसे एक व्यक्ति सपने में अपने को टिड्डी रूप में देखकर मूँझ गया कि वास्तव में मैं मनुष्य हूँ और टिड्डी रूप में सपना देखा है या वास्तव में टिड्डी हूँ, और मनुष्य रूप का सपना देख रहा हूँ, उलझा हुआ मानव भी सोच रहा है कि वास्तव में मैं आदि रूप में पावन हूँ और पूर्ण सुख शांति से युक्त जीवनयापन कर चुका हूँ या आदिकाल से ही नाजुक समय का सामना करता आ रहा हूँ। परन्तु सृष्टिचक्र में अपने स्वरूप की निष्पक्ष झलक देखने के बाद यह निर्णय करने में कोई संशय नहीं रहना चाहिए कि कालचक्र में पवित्रता का पलड़ा भारी है, पवित्रता हमारी आंतरिक माँग है यही सुख-शांति की जननी है और यही वास्तविकता है। □

सहकारात्मक आदि सेवा के विविध स्वरूप

□बी.के. रमेश., बम्बई

इस १९८६ वर्ष में विशेष रूप से परमपिता शिव बाबा ने जो अनुभवात्मक तथा सहकारात्मक ईश्वरीय सेवाएं हम आत्माओं को सिखाई हैं उसके विविध विस्तार को जानना जरूरी है। नासिक के समीप त्रंबकेश्वर के पहाड़ से निकली गोदावरी नदी कितनी छोटी है। नासिक में जो उस नदी पर लकड़ी का पुल है वह कितना छोटा है और राजमहेंद्री के पास उसी नदी पर जो पुल है वह कितना विशाल है। आदि के साथ-साथ अंत के स्वरूप का ख्याल करना जरूरी है तब संपूर्ण और सफल प्लानिंग होगी।

अनुभवात्मक सेवा का प्रारंभिक स्वरूप है आनेवालों को परमात्मा के रूप, गुण, कर्तव्य, शक्ति तथा संबंधों का अनुभव कराना। यह छोटा-सा बीज कैसा वृक्ष बनेगा! दूरदर्शन रूपी माध्यम द्वारा आज कितने असंख्य लोग दृश्य श्राव्य की अनुभूति करते हैं। उसी तरह यह अनुभवात्मक सेवा आगे चलकर साक्षात्कार की सेवा बन जायेगी। एक परमात्मा की एकांत याद में स्थित रहकर अनेकों को इस ईश्वरीय शक्ति की अनुभूति होगी। शुरू के इतिहास पर दृष्टि क्षेप करने से मालूम पड़ेगा—ॐ मंडली के साक्षात्कार 'पैसे पैसे कुलफी' जैसे साक्षात्कार का नज़ारा फिर से होगा। उसी समय पर वह कार्य परमात्मा द्वारा जो हुआ फिर से परमात्मा, हम साक्षात्कार मूर्त बच्चों के फरिश्ते स्वरूप द्वारा करा सकेंगे। ज्ञान और योग के पंख पर उड़कर, जहां-तहां यह अनुभव सबको होगा. ये सितारे-ये फरिश्ते-ये पैगम्बर कहां से आये? आकाशवाणी रूपी सूक्ष्म आवाज़, स्वप्नों के विचित्र अनुभव आदि-आदि अनेक रूप से, लोग ढूंढ़ेंगे कि यह क्या हो रहा है?

द्वापरयुग से इस धरा पर आनेवाले हमारा गायन और पूजन करनेवाले भक्त अपने होवनहार इष्ट देवों का अब भी आहवान कर रहे हैं, पुकार रहे हैं, सोच रहे हैं, चिल्ला रहे हैं। उनकी वह पुकार जब हम योग की उसी उच्च अवस्था में होते हैं तब हमारे कानों पर आती है। उनकी वह पुकार सुनकर, फरिश्ते रूपधारी, इष्ट देवताएं, अपने भक्तों का कल्याण करने के लिए उपकार की भावना से जब इस विशेष ईश्वरीय सेवा के अनुभवी बनकर प्रयोग करेंगे तब उस आखिरी सेवा के समय कल्याणकारी पिता परमेश्वर के साथ-साथ कल्याणकारी बच्चों का भी गायन होगा। जब अनुभवात्मक, साक्षात्कार स्वरूप सेवा के अंतिम स्वरूप को सोचते हैं तब हमारे रोमांच खड़े हो जाते हैं। दिल-मुग्ध भाव से पुकारता है—वाह बाबा, वाह तेरी अपरमपार लीला और वाह हमारी तकदीर जो इस सेवा के लायक प्रभु-शक्ति के द्वारा बने। ऐसी सेवा के निमित्त बनने का सौभाग्य प्राप्त करना यह अति श्रेष्ठ उत्तम सौभाग्य की निशानी है। जिस सेवा में देश, काल, भाषा, समय, आदि-आदि का कोई भेद नहीं होगा—कोई हद नहीं होगी, ऐसा बेहद का स्वरूप, यह अंतिम स्वरूप प्रयोगात्मक सेवा का होगा। यही सेवा हमें विश्व-कल्याणकारी की स्टेज पर विश्व के सामने प्रत्यक्ष करेगी। त्रिकालदर्शी परमात्मा हमें 'इस होवनहार सेवा का पहिले से ज्ञान देते हैं। इसलिए हमारा यह फर्ज है कि हम उसके विधि-विधान को समझ, उसकी ट्रेनिंग लेकर लायक बनें। साक्षात्कार द्वारा जो अनुभूति होगी यह सार्थक होगी। याद करो अपनी दादी कुमारकाजी का वह अनुभव। उन्होंने बचपन में, थोड़े दिन पहले स्वप्न देखा था जिसमें श्रीकृष्ण का बाल स्वरूप गेंदों से खेलता हुआ देखा। और बाद में २-४ दिनों में अपनी सखी द्वारा सुना—दादा लेखराजजी के पास सतसंग होता है। पिताजी की स्वीकृति से उस सतसंग में स्वयं गईं और वहां वही उनकी स्वप्नों की दुनिया का श्रृंगार मनमोहक श्रीकृष्ण को गेंद से खेलता देखा और खेलते-खेलते वह पिताश्री की ओर जाने लगा और अंत में पिताश्री (दादा लेखराज) के शरीर में अंतर्ध्यान हो गया। उसी साक्षात्कार नें उन्हों के जीवन में परिवर्तन लाया। ऐसे मीठे-सुहावने साक्षात्कार के अनुभव कई बहन-भाइयों के हैं। उसको शब्द-स्वरूप दें तो एक तो क्या १० भागवत के ग्रंथ भर सकते हैं। इसी कारण शिव बाबा हम बच्चों को कहते हैं—मीठे बच्चे, जो आदि में हुआ, वही फिर से अंत में होगा। तो यह है अनुभवात्मक-प्रयोगात्मक साक्षात्कारमूर्त सेवा का अंतिम स्वरूप। कितना रोचक, मीठा, आल्हादायक, मनभावक, रोमांचक स्वरूप है।

दूसरी विशेष ईश्वरीय सेवा हम बच्चों को इस वर्ष शिव

बाबा ने सिखाई है वह है सहयोगात्मक ईश्वरीय सेवा । इस सेवा ने तो अपना मंगल शुभ प्रारंभ बड़े ही धूमधाम से किया है । इस सेवा का आविष्कार और स्वरूप है 'मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस' का कार्यक्रम । देश-विदेश में सब बहन-भाइयों को इस सेवा में जो सफलता मिली है उससे हम सोच-समझ सकते हैं कि जिसका आदि इतना सफल है, उसका अंत कितना सुमधुर होगा ? देश-विदेश में अनेक गणमान्य व्यक्तियों और संस्थाओं ने इसमें सहयोग दिया । यह शांति की शक्ति जो इस विशेष सहयोगात्मक सेवा द्वारा निर्माण होगी, उसको जब सोचते हैं तो लगता है शिव बाबा 'पीस बैंक' (Peace Bank) में सबकी शांति की शक्ति जमा कर रहे हैं और वह गीत के शब्द सार्थक हो रहे हैं जिसमें कवि ने गाया है—''शांति की शक्ति से शांति जग में लानी है ।'' और सब तभी शांति को अपना स्वधर्म समझेंगे । इस सहकारात्मक सेवा से सभी आत्माएं सत-त्रेता-द्वापर में प्राप्त होनेवाला अपना भाग्य प्राप्त करेंगे । जो इस सेवा में प्रत्यक्ष रूप से मददगार बनेंगे वह स्वर्गिक सृष्टि में अपना अवतरण करेंगे और अपरोक्ष रूप से—गुप्त रूप से उसमें मददगार बननेवाले द्वापरयुग से अपना श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त करेंगे । सृष्टि रंगमंच पर जो भी कार्य हो रहा है उसको शुभ रूप से देखेंगे—समझने की कोशिश करेंगे तो सदा हर्षित रहेंगे । क्योंकि वर्तमान की हरेक कार्यविधि जो अभी लघुरूप में (Micro) है वही उसके विस्तार रूप से (Macro) जब प्रत्यक्ष होगी, तब सृष्टि रंगमंच पर उसका प्रभाव निराला होगा । इसी कारण यह सहकारात्मक सेवा गुप्त रूप से हो वा प्रत्यक्ष रूप से हो—ऐसी चर्चा निरर्थक है—जहां-जहां जिस प्रकार का वायुमंडल हो उसी प्रकार से वहां यह सेवा कर सकते हैं, ऐसा मैं मानता हूं । विविध रूप से और विविधभाव से सेवा हो सकती है । प्यारे बाबा को प्रत्यक्ष करने की सेवा में सबका स्थान है, सबकी प्राप्ति अपनी-अपनी है । इसलिए मैं तो सेवा के सर्व रूपों को स्वीकार करता हूं । भोजन में पकौड़े भी चाहिए तो चटनी भी चाहिए । गुलदस्ते में सब फूलों की सजावट है तो मनोहर गुलदस्ता मनभावक होता है ।

शांति के इस कार्यक्रम में सबका सहयोग मिला है । ऐसे अनेक अन्य कार्यक्रम हैं जिसमें सबका सहयोग मिल सकता है । कोई कार्यक्रम समस्त विश्व के अनुरूप होंगे तो कोई कार्यक्रम राष्ट्रीय तो कोई कार्यक्रम स्थानिक (Local) समस्याओं के समाधान में सहकार रूप से होंगे । हम सबने एक प्रदर्शनी बनाई थी जिसका नाम था साप्रत समस्याएं और उनके आध्यात्मिक समाधान (Current problems and their spiritual solutions) । शिव बाबा के दरबार में सभी समस्याओं का जवाब—समाधान है । बाबा द्वारा प्राप्त ज्ञान सबको समाधान देता है ।

उदाहरण के तौर पर—शांति का यह सहकारात्मक सेवा का प्रकार विश्व के लिए कार्यक्रम के रूप में हो सका । ऐसे ही गरीबी (Poverty) दूर करने का कार्यक्रम है । हमारे प्यारे शिव बाबा विश्व की गरीबी दूर कर रहे हैं । जैसे संपत्ति अनेक प्रकार की है वैसे गरीबी अनेक प्रकार की है । गरीबी उन्मूलन के लिए विविध प्रकार का कार्यक्रम बना सकते हैं । मन की गरीबी, धन की गरीबी, तन की गरीबी आदि अनेक प्रकार की गरीबी है । अनेक व्यक्ति तथा संस्थाएं इस कार्यक्रम में मददगार बन सकती हैं ।

ऐसे ही है निरक्षरता निर्मूलन कार्यक्रम – अक्षर ज्ञान का अज्ञान दूर करने का कार्यक्रम । अनेक प्रकार के अज्ञान हैं—अंधश्रद्धा है । सतयुग में यह अज्ञान तथा अंधश्रद्धा नहीं रहेगी । यह प्यारा कार्य भी शिव बाबा कर रहे हैं, उनका परिचय भी सबको देना जरूरी है । भूत-प्रेत, वहम, जड़-मान्यताएं, आदि अनेक बाते हैं । झूठे सामाजिक रिवाज जैसे दहेजप्रथा, हरिजनप्रथा, जाति-भेद आदि अनेक सामाजिक समस्याएं हैं । ये सब सामाजिक समस्याएं स्वर्ग में नहीं होंगी । कैसे नहीं होंगी और क्यों नहीं होंगी उसकी चर्चा और सेवा भी सहकारात्मक सेवा का भाग बन सकता है । स्वर्ग से इस धरा पर गंगा अवतरित हुई तो सबका कल्याण करने लगी । ऐसे ही परमपिता शिव बाबा के मुख-कमल से निकली ज्ञान-गंगा समाज के सभी स्तरीय लोगों को मदद कर सकती है । ये ज्ञान-गंगा सभी सामाजिक समस्याएं दूर करेंगी । ऐसे नये सेवा के रूप अपनायेंगे तो जो नये बहन-भाई निकलेंगे यह स्वत: ही यह कार्य उठा लेंगे । उसका आर्थिक वा अन्य प्रकार का बोझ-बोझ नहीं होगा । हमें तो उसमें मार्गदर्शक बनना होगा—करनेवाले दिल से यह नवीन प्रकार की सहयोगात्मक सेवाएं करेंगे । जैसे अब भी इस 'मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस' के कार्यक्रम में कई स्थानों पर अच्छा सहयोग मिला है । किसी ने ऑफिस के लिए स्थान दिया तो किसी ने प्रचारार्थ पर्चे आदि छपाकर दिये । इस प्रकार के सहकार द्वारा कार्य सहज हो जायेगा । इस तरह सहकारात्मक सेवा द्वारा समाज-कल्याण अर्थ अनेक प्रकार की सेवाएं होंगी और इस विश्वविद्यालय का तथा ईश्वरीय ज्ञान का समाजोपयोगी तत्व प्रसिद्ध होगा । विश्व परिवर्तन के कार्य में यह समाज सेवा का कार्य ही आगे चलकर अपनी बहुविध प्रतिभा प्रत्यक्ष करेगी ।

इस दृष्टि से देखा जाए तो यह दोनों नये प्रकार की सेवा,

शेष पृष्ठ२४ पर

"भगवान के नाम भक्त का पत्र"

□ब्र.कु. अशोक., आबू पर्वत

हे प्राण, कृपा निधान, दयानिधान भक्तों के रक्षक भगवान... मुझे ज्ञात नहीं है कि आप कहां हो, फिर भी मैं अंधेरनगरी के सुनसान डगर से, कलह-क्लेश की कलम से और आंसुओं की स्याई से आपको यह दुखभरा पत्र लिख रहा हूं। यदि आपको मेरा यह पत्र मिले तो हे, सर्व की आशाओं को पूर्ण करनेवाले, पत्रोत्तर अवश्य देना।

आपसे मिलने की मुझे जन्म-जन्म की आश है, मैं आंख बिछाए आपकी बांट जोह रहा हूं । सुना है आपने शबरी को घर जाकर दर्शन दिये, आपने केवट को भवसागर से तार दिया, अहिल्या को भी मुक्त किया । तो हे प्रभु मुझ पापी को भी दर्शन दो।

मैंने आपको बहुत ढूंढ़ा परंतु कहीं भी कोई चिराग न मिला । मंदिर व गुरुद्वारे में भटक-भटककर मेरे पैरों में छाले पड़ गये । मैंने बार-बार विद्वानों व शास्त्रवादियों के द्वार खटखटाये । शास्त्र पढ़-पढ़कर मेरी आंखें भी कमज़ोर हो गईं । तीर्थ-यात्राएं कर-करके मैं कंगाल हो गया हूं । जहां भी जाता हूं यही आवाज़ आती है कि वह तुम्हारे अंदर ही है । परंतु मैंने तुम्हें अपने अंदर भी बहुत ढूंढ़ा, मुझे कहीं नहीं मिला । हे प्रभु अब मैं निराश हो चुका हूं । मेरा मन बहुत दुखी है । आप मुझे सत्य पथ दर्शाओ...

आपका भक्त अशोक

"भगवान का उत्तर"

मेरे अतिप्रिय भक्त...

तेरा करूणा-भरा पत्र पढ़कर मेरा दिल पिघल गया, मेरा सिंहासन हिल गया । तुमने मेरी खोज में बहुत कष्ट उठाए । तूने मुझे पाने के लिए जंगलों की धूल फांकी । परंतु...

तुम तो मेरे प्यारे बच्चे हो । मेरे नयनों के नूर हो...अब तुम्हारी भक्ति पूर्ण हुई । अब तुम्हें और अधिक भटकने की जरूरत नहीं । अब मुझे मिलने का रास्ता मैं स्वयं ही तुम्हें बता देता हूं । तुम निश्चिंत होकर वहां जाओ और मुझे प्राप्त करो ।

अब कलियुग के अंत में, सभी भक्तों को दर्शन देने, सत्य-ज्ञान देकर पतितों को पावन बनाने व इस दुखी दुनिया का संहार करने मैं स्वयं निराकार परमात्मा इस धरा पर अवतरित हो चुका हूं । मेरा कार्य गुप्त रूप से चल रहा है । श्वेत वस्त्रधारी ब्रह्मा व ब्रह्माकुमार-कुमारियों द्वारा मैं अपना कार्य करा रहा हूं । उनके द्वारा ही आप मुझसे मिल सकते हैं । अत: आप कहीं भी उनसे मिलकर अपनी जन्म-जन्म की प्यास बुझा लो।

आपका सच्चा परमपिता शिवबाबा

वह क्या हैं ?

□ले- बी.के. स्नेहलता, भिंद्र (म.प्र.)

- जिसका पहला अक्षर सत्य में है, असत्य में नहीं।
- जिसका दूसरा अक्षर त्याग में है, भाग्य में नहीं।
- जिसका तीसरा अक्षर यज्ञ में है, तप में नहीं।
- जिसका चौथा अक्षर मन में है, धन में नहीं।
- जिसका पांचवां अक्षर शिव में है, शंकर में नहीं।
- जिसका छठा अक्षर वतन में है, विरान में नहीं।
- जिसका सातवां अक्षर मधुरता में है, कटुता में नहीं।
- जिसका आठवां अक्षर सुखधाम् में है, दुखधाम् में नहीं।
- जिसका नवां अक्षर न्याय में है, अन्याय में नहीं।
- जिसका दसवां अक्षर दया में है, क्रोध में नहीं।
- जिसका ग्यारहवां अक्षर रक्षक में है, भक्षक में नहीं।
- जिसका बारहवां अक्षर महिमा में है, निंदा में नहीं।

वह है—सत्यम् शिवम् सुंदरम्

जीवन का आनंद और अंतर्मुखी व्यक्तित्व

□बी.के. मंजू., इटावा

"घूंघट के पट खोल तोहे पिया मिलेंगे।"

जी हाँ, किसी फ़कीर ने उपरोक्त वाक्य अक्षरश: सत्य कहा है। अपने वाक्य में उसने फ़कीरी के सुख का वर्णन किया है। यह मेरी, आपकी नहीं, एक युग की पुकार है। अशांत आत्माओं के लिए यह एक आहवान है कि अंतर्मन में झांकने पर उन्हें परमशांति व शीतलता का अनुभव होगा। प्रत्येक मानव को वर्षों से इसकी तलाश है।

आप-अपने जीवन में क्या चाहते हैं? आखिर जीवन का लक्ष्य क्या है? संसार में धन, संपत्ति, ऐश्वर्य, ख्याति प्राप्त करके भी मनुष्य प्यासा क्यों है? यह किस वस्तु की प्यास है?

यद्यपि आज का मानव भौतिकवादी है परंतु जीवन के दूसरे पक्ष आध्यात्म से अनभिज्ञ हैं। आत्म-निरीक्षण करने में उसे भय का अनुभव होता है। इसलिए दुनिया के बहते रंग में बहना ही मनुष्य अपनी नियति मान लेता है और मानव जीवन का सुख जिसे 'आत्म संतोष' की संज्ञा दे सकते हैं, प्राप्त नहीं कर पाता है। यह आत्मिक सुख कैसे प्राप्त हो इस संदर्भ में गहराई से विचार करना होगा।

मानव व्यक्तित्व के दो पहलू हैं...

मनोवैज्ञानिकों का कथन है—मनुष्य का व्यक्तित्व दो पहलुओं से संबंधित है। इसका अध्ययन दो रुपों में किया जा सकता है। अंतर्मुखी (Introvert) और बाहयमुखी (Extrovert) प्रश्न यह उठता है कि बाहय व्यक्तित्व आंतरिक का संचालनकर्त्ता है या अंतर्मुखी व्यक्तित्व बाहय व्यक्तित्व का।

मानव धारणा के अनुसार तो बाहय व्यक्तित्व का निखार ही समाज में पद प्रतिष्ठा मान दिलाता है। संसार में ऐसे भी लोग हैं जो प्रकृति के प्रति आसक्त हैं किंतु स्वयं के विषय में विचार करने से पलायन करते हैं। मनुष्य सारा दिन इंद्रियों का व्यापार करता है। कभी नेत्रों द्वारा लुभावने दृश्य का रसास्वादन करता है तो कानों द्वारा मधुर संगीत का। आत्मिक सुख के परमानंद से वंचित रह जाता है।

स्वयं की क्षणिक तृप्ति के लिए क्लब, डांस, मदिरा का आश्रय लेते हैं और पद दलित बनते जाते हैं।

परंतु शायद आप ऐसे महापुरुषों की वास्तविक मन:स्थिति से अवगत हों यदि नहीं तो सुनिए कभी-कभी ऐसे-ऐसे हर्षितमुख मिलनसार लोग आपको उस सुनहरे बांस के समान विदित होंगे जो भीतर से पोला है। अर्थात् वे एकांत के क्षणों की भयानकता को सहन करने में अक्षम हैं इसलिए अपना निरीक्षण करना नहीं चाहते। अपने चारों ओर इस तरह महफिल का जमाव रखना चाहते हैं कि उन्हें कभी भीतर की आवाज़ सुनाई ही न दे।

लेकिन आप जानते हैं यदि किसी फोड़े को आप छिपाने का प्रयास करेंगे तो वह नासूर का रूप धारण कर लेगा। उसकी दुर्गंध—न केवल आपको वरन् आसपास के लोगों को परेशान करेगी।

अंतर्मुखी का भावार्थ...

इस देह और देह की दुनिया से पार जो आत्मा और परमात्मा का संसार है मनुष्य उसका रसास्वादन कर सके। कान वही सुने, नेत्र वही देखें जिसके अवलोकन से आत्मा की उन्नति हो

अंतर्मुखता ही बाहरी व्यक्तित्व में रंग भर देती है...

परमपिता शिव कहते हैं आप वास्तव में एक सुख-स्वरूप शांत-स्वरूप ज्योर्तिबिंदु आत्मा हो। उसका संबंध शांति सागर परमात्मा के साथ है। यदि जीवन में हम कुछ क्षण आत्मनिरीक्षण के लिए निकालें तो एकांत के वे क्षण हमें स्वर्गिक सुख प्रदान करेंगे। अंतर्मन को सुंदर शांत, प्रतिभा सम्पन्न बनाने से बाहरी व्यक्तित्व भी चंद्रमा की उज्ज्वल चांदनी-सा छिटककर युग नभ पर छा जायेगा। प्रतिभा और महानता एकांत में ही पल्लवित और पुष्पित होती है।

शेष पृष्ठ २४ पर

भावना और विवेक

□ले-.ब्र.कु. माँगीलाल कोटा., राज.

पुराने समय की बात है। उस समय आजकल की तरह बस, रेलगाड़ी न थी । न ही आजकल की तरह शिक्षा । उस समय विद्यार्थी आश्रम के शांत वातावरण में विद्या-अध्ययन करते थे । आश्रम शहर से दूर जहां ठंडे पानी का झरना सुंदर-सुंदर वृक्ष, हरे-हरे घास के सुरम्य मैदान, पक्षियों का मधुर कलरव प्रकृति की गोद में होते थे ।

ऐसे ही पवित्र सुंदर स्थान पर एक आश्रम था । वहां श्रेष्ठ दिव्य चरित्र निर्माण की शिक्षा दी जाती थी । एक गुरुजी अपने शिष्यों को वहां शिक्षा देते थे ।

एक दिन गुरुजी कहीं लंबे समय के लिए विदेश-भ्रमण पर जानेवाले थे । अपने शिष्यों की परीक्षा का उचित समय था । उन्होंने अपने मुख्य दोनों शिष्यों को बुलाकर कुछ अनाज के दाने दिये । ''मीठे-मीठे बच्चों ! मैं कुछ समय के लिए बाहर यात्रा पर जा रहा हूं । मैंने जो अनाज के बीज दिये हैं इन्हें अपनी इच्छानुसार सदुपयोग में लाना । बहुत प्यार-से रहना और आश्रम की देखभाल ध्यान-से करना '' दोनों शिष्यों ने अपने गुरुवर की बात को ध्यान से सुना और बोले आप किसी प्रकार की चिंता न करें । हम भली प्रकार आश्रम की देखभाल करेंगे । वे गुरुजी को बहुत प्यार से दूर तक विदा देने आये । दोनों शिष्यों ने आदर सहित प्रणाम किया और लौट गये। समय पंख लगाकर उड़ने लगा । दिन महीना यहां तक एक वर्ष बीत गया परंतु गुरुजी नहीं लौटे । पूरे पांच वर्ष बीत गये । छठे वर्ष में गुरुजी लौटे । दोनों शिष्य अपने गुरुजी को आया देख आनंदविभोर हो उठे । आदर सहित आश्रम में ले आये ।

आश्रम पहुंचने पर गुरुजी ने दोनों शिष्यों को अपने पास बुलाया । दोनों शिष्य उनके पास पहुंचे । सबसे पहले बड़े शिष्य से पूछा, ''बच्चे यात्रा पर जाते वक्त मैंने तुम्हें कुछ अनाज के दाने दिये थे उनका तुमने क्या किया ?''

''गुरुजी आप क्षणिक ठहरे मैं अभी आता हूं।'' इतना कहकर वह खुशी से अपने कमरे की ओर गया और एक संदूक उठा लाया । जिसपर लाल रंग का कपड़ा लिपटा हुआ था । अगरबत्ती की खुशबू से महक रहा था वह छोटा-सा संदूक । वह संदूक को अपने गुरु के सामने रखकर बोला—गुरुदेव, यह आपका दिया हुआ प्रसाद था अत: इसकी बड़ी श्रद्धा से, भावना से पूजा करता था । अगरबत्ती लगाता था । आपको भी अगरबत्ती की खुशबू आ रही होगी संदूक से ।

गुरुजी ने संदूक खोला तो क्या देखते हैं कि सारा अनाज सड़ गया है । एक भी अन्न-कण काम का न रहा । सब कीड़ेखा गये हैं । यह देख गुरुजी को बड़ा अफसोस हुआ । फिर दूसरे-से मुड़कर पूछा—बच्चे, तुमने अनाज का क्या किया ?'' शिष्य ने गुरुजी को अपने साथ चलने को कहा। गुरुजी उसके पीछे-पीछे चल दिये । एक सुंदर कुएं (Well) की ओर इशारा करके बोला—''गुरुजी आप जो यह नया मीठे पानी का कुंआ देख रहे हैं उधर वह बहुत सुंदर धर्मशाला है ना ! और इधर आश्रम के पास सुंदर फूलों का बगीचा । नया आश्रम जो बना है । यह सब-कुछ आप-देख रहे हैं यही वही आपके बीज का फल है । यह सब देखकर गुरुजी बड़े विस्मित हुए । उन्होंने पूछा—बच्चे यह कैसे हुआ ? जरा बताओ ! शिष्य बोला—गुरुजी आपके दिये बीज को मैंने उसी वर्ष आश्रम के पास की उपजाऊ भूमि में बो दिया । धरती मां ने एक का सौ गुना करके दिया । एक वर्ष में इतना अनाज हो गया था कि मैं बहुत ज़मीन में बीज बो सकता था । दूसरे वर्ष काफी ज़मीन में अनाज बोया । अध्ययन करने के बाद मेरे पास जो समय बचता मैं मेहनत करता था । मेहनत का फल भगवान अवश्य देते हैं । इस वर्ष बहुत अनाज हुआ । इससे मैंने काफी अनाज प्राप्त किया । क्योंकि यह आपकी अमानत थी । मैंने आश्रम को बहुत अच्छा बनाया । धन प्राप्त करके । नया आश्रम, सुंदर मीठे पानी का कुंआ भी खुदवाया ।''

यह सब देख अपने विवेकशील शिष्य को अपने गले से लगा लिया । बेचारा बड़ा शिष्य तो काटो तो खून नहीं वह तो शर्म के मारे झुक गया ।

गुरुजी बोले, ''बच्चो ! श्रद्धा तो जीवन में होनी ही चाहिए परंतु विवेक भी साथ में चाहिए । बिना श्रद्धा भावना के विवेक-शून्य बनकर रह जाता है । और बिना विवेक के भावना सुंदर नहीं लगती । जहां भावना जीवन की मिठास है वहां विवेक जीवन का नमक है । एक जीवन को मधुर बनाता है वहां दूसरा जीवन को सुरक्षित रखता है।

भावना और विवेक जीवन-गाड़ी के दो पहलू हैं । यदि इनमें से एक नहीं हो तो दूसरा पहलू चल नहीं सकता । बड़े शिष्य को बात समझ में आ गई कि भावना के साथ विवेक कितना आवश्यक है।

आज हमारे परम-सद्गुरु, परम-शिक्षक ज्ञानसागर शिव बाबा हमें ज्ञानरूपी बीज देते हैं । इन ज्ञान के बीजों को हमें अन्य आत्माओं रूपी धरती में बोना है । वरना ये बीज वैसे ही सड़ जायेंगे ।

शिव बाबा कहते मेरे पास दो प्रकार के बच्चे आते हैं । पहले भावना वाले जो चढ़ते भी बहुत जल्दी और उतरते भी बहुत जल्दी । दूसरे विवेकवान या ज्ञानी जो एकरस स्वयं रहते हैं जो ज्ञान को धारणा करते-कराते हैं । प्रथम प्रकार के पत्ते दूसरे प्रकार के फल हैं । वैसे बाप के प्यारे लाडले तो दोनों हैं, पर जो भावना और विवेक सहित आते वे बाबा को अतिप्रिय बहुत-बहुत मीठे लगते हैं । बाबा कहते—ऐसे बच्चे ही माया जीत बनने हैं । □□□

अहमदाबाद: शांति वर्ष के उपलक्ष्य में टाउन हॉल में 'शांति संगीत सन्ध्या' के कार्यक्रम में प्रवचन करती हुई ब्र.कु. शारदा जी।

हरिद्वार में सुभाषघाट पर प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए स्वामी माधवाचार्य जी अध्यक्ष मानस मंदिर हरिद्वार ।

नजीबाबाद: में शांति प्रदर्शनी का उद्घाटन आचार्य तुलाराम जी कर रहे हैं।

भीलवाड़ा: में ज्ञानांजली कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी पुष्पा बहन मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भ्राता प्राणजीवन जी का स्वागत करते हुए।

शांति का स्वरूप

□बी.के. रामबहादुर सिंह चौहान., कानपुर

किसी व्यक्ति, वातावरण या कार्यप्रणाली के संदर्भ में शांति वह सामान्य प्रक्रिया है जिसमें कार्य का सम्पादन सुचारू रूप से किया जा सके । इस प्रक्रिया के अंतर्गत किसी भी बाह्य एवं आंतरिक व्यवस्था को व्यवधान, बाधा या विषाद का अवसर उत्पन्न नहीं होता है तथा इस प्रक्रिया का किसी पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है।

आत्मा का मूल स्वभाव शांति है । किसी व्यक्ति के संदर्भ में शांति वह मानसिक स्थिति है जिसमें किसी भी प्रकार का विकार अर्थात् नकारात्मक प्रवृत्तियों का समावेश न हो । निर्विकारी स्थिति ही शांति की स्थिति है । शांति-स्वरूप की स्थिति में व्यक्ति आत्मनिष्ठ होकर सकारात्मक विचारों एवं गुणों से प्रभावित होकर क्रियाशील होता है। उसका कार्य स्वयं तथा अन्य के लिए कल्याणकारी होता है।

शांति की स्थिति में समस्त सूक्ष्म एवं स्थूल इंद्रियां अपने मूल स्वभाव एवं धर्म के अनुकूल क्रियाशील होती हैं । इंद्रियों का सात्विक होकर कल्याणकारी कार्य में तत्पर होना शांति की अवस्था है । शांति की स्थिति में संकल्प-वाणी-कर्मों में संतुलन होता है तथा हर कार्य में सफलता प्राप्त होती है। परिणामस्वरूप जीवन आनंदमय बन जाता है । परिस्थिति चाहे अनुकूल हो या प्रतिकूल, स्वरूप में स्थित होकर किया गया संकल्प वाणी व कर्म जो स्वयं व अन्य के लिए कल्याणकारी हो शांति-स्वरूप स्थिति का **निर्णायक तत्व है**। आत्मा के मूल स्वभाव की अभिव्यक्ति सहयोग, अहिंसा, क्षमा, स्नेह, भ्रातृत्व भाव के रूप में होती है ये अभिव्यक्ति आत्मा पर किसी दबाव, भय या प्रलोभन वश नहीं होती, उसके मूल स्वभाव में निहित सकारात्मक प्रवृत्तियों-शांति प्रेम, दया, ज्ञान, शक्ति, आनंद आदि के कारण होती है।

अतः आत्म-स्वरूप ही वह आधार है जिस आधार पर स्थित होकर आत्मा शांति-स्वरूप में स्थित होती तथा आत्म-स्वरूप में स्थिर रहने का उपाय राजयोग है।

निष्क्रिय या शून्य की स्थिति शांति की स्थिति नहीं है बल्कि संकल्प-वाणी-कर्मों की नियंत्रित प्रक्रिया जोकि रचनात्मक प्रयोजन हेतु हो तथा जिसका प्रतिकूल प्रभाव न पड़े शांति-स्वरूप की स्थिति है।

जैसे किसी कक्षा में अध्यापक द्वारा किया जा रहा अध्यापन कार्य। यहां कक्षा में विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए अध्यापक द्वारा बोलने में की गई आवाज़ भी शांति की परिधि के अंतर्गत आती है । परंतु यदि विद्यार्थीगण कक्षा के नियमों का उल्लंघन करके एकसाथ तेज़ी से बोलने लगें तो यह शोर अशांति का रूप होगा क्योंकि विद्यार्थियों के इस कार्य से न केवल पढ़ाई की प्रक्रिया प्रतिकूल रूप से प्रभावित हो रही है बल्कि शोर से कक्षा के बाहर के अन्य विद्यार्थियों पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

मनोविकार यथा, भय, चिंता, लोभ, मोह, अहंकार शांति के शत्रु हैं । अतः निर्विकारी स्थिति ही शांति की स्थिति है। किसी भी विकार के आते ही संकल्प-वाणी-कर्म आत्मिक स्वरूप की सकारात्मक प्रवृत्तियों से हटकर क्रियाशील होने लगते हैं । परिणामस्वरूप कर्मों की अभिव्यक्ति का स्वरूप ही बदल जाता है । विकारों से प्रभावित होकर किए गए कर्म विकर्म बन जाते हैं जिनके कारण दुख व अशांति प्राप्त होती है। उदाहरणतः क्रोधरूपी विकार के आने पर अवस्था सामान्य से असामान्य हो जाती है । परिणामस्वरूप इस असामान्य अवस्था में संकल्प-वाणी-कर्मों में असंतुलन पैदा हो जाता है तथा किया गया कार्य विकर्म होने के कारण दुख-अशांति पहुंचाता है।

अशांति के विभिन्न रूपों जैसे व्यर्थ संकल्पों की हलचल, अपनी कमज़ोरियों की हलचल, प्रकृति की हलचल, वातावरण की हलचल, विकारों की हलचल, देह व देह के संबंधों की हलचल के मध्य शांति-स्वरूप की स्थिति में रहना ही **शांति की कसौटी** हैं ।

किसी क्षेत्र में विधि एवं व्यवस्था (Law & Order) की स्थिति ठीक होने के कारण कहा जाता है वहां शांति है। इसके विपरीत यदि किसी क्षेत्र में हिंसा, आगज़नी, दंगा, डकैती व भय व्याप्त है तो कहा जाता है उस क्षेत्र में अशांति है। इसी प्रकार यदि हम आत्म-स्वरूप में स्थित हैं तथा हमारी इंद्रियां हमारे अधीन होकर आत्म-स्वरूप की सकारात्मक विशेषताओं

से प्रभावित होकर क्रियाशील हैं तो उसे शांति की स्थिति ही कहा जायेगा परंतु यही इंद्रियां यदि विकारों से प्रभावित होकर क्रियाशील हैं तो अशांति की स्थिति कही जायेगी । शांति के विभिन्न स्वरूप होते हैं यथा वैयक्तिव शांति, पारिवारिक शक्ति, क्षेत्रीय शांति, सामाजिक शांति, राष्ट्रीय शांति, विश्वशांति आदि।

शांति की विशेषताएं

१. पवित्रता शांति की जननी है।
२. आत्म-अभिमान शांति का आधार है।
३. राजयोग आत्म-स्वरूप में स्थित होने का एकमात्र उपाय है।
४. शांति आत्म-स्वरूप की विशेषताओं यथा प्रेम, आनंद, ज्ञान, शक्ति से प्रभावित होती है।
५. शांति की अभिव्यक्ति क्षमा, दया, परोपकार, अहिंसा, सहयोग, स्नेह व भ्रातृत्व भाव में होती है।
६. शांति, स्वयं व विश्व के लिए कल्याणकारी है।
७. शांति की स्थिति में आत्मा विकारों से मुक्त होती है।
८. शांति की स्थिति में इंद्रियां विकारों से मुक्त होती है।
९. शांति की स्थिति में इंद्रियां आत्मा के आधीन होकर क्रियाशील होती हैं ।
१०. शांति की स्थिति में किए गए कर्म, सुकर्म होने के कारण सुखदायी होते हैं ।
११. शांति में शारीरिक व मानसिक स्थिति सामान्य रहती हैं ।
१२. शांति के साथ प्रेम व आनंद परछायी की तरह साथ-साथ रहते हैं ।

बरनाला: में एस.डी.एम. को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात बी.के. बृज उन्हें आध्यात्मिक साहित्य भेंट करते हुए।

१३. शांति में संकल्प,वाणी, कर्म शुभ व श्रेष्ठ होने हैं ।
१४. शांति; विकार रहित स्थिति है।
१५. शांति में संकल्प-वाणी-कर्मों में संतुलन रहता है।
१६. शांति में एकाग्रता, कार्यक्षमता, एवं शुद्धता में वृद्धि होती है ।
१७. शांति में मानसिक संतुलन, रक्तचाप, एवं पाचनक्रिया में श्रेष्ठता आती तथा शरीर की ग्रंथियों से स्राव सामान्य रूप से होने लगता है।
१८. शांति में परखने, निर्णय करने, सहन करने व समाने की शक्तियां उत्पन्न होती हैं ।
१९. शांति-स्वरूप की स्थिति से अंतमुर्खता, हर्षितमुखता, गंभीरता, नम्रता, निरहंकारिता, परोपकार, समर्थता आदि गुण उत्पन्न हो जाते हैं तथा बाहयमुखता, दुख, उच्छृंखलता, निर्दयता, अहंकार, व्यर्थता आदि दुगुर्ण दूर हो जाते हैं ।

शांति-स्वरूप-स्थिति का अनुभव

मैं आत्मा शांत-स्वरूप हूं। मेरा स्वधर्म शांति व मेरा स्वदेश शांतिधाम है—मैं शांति के सागर में स्नान कर रही हूं । अहा सर्वत्र शांति-ही-शांति अनुभव हो रही है।

मैं मास्टर शांति सागर हूं...अनुभव कर रहा हूं...शांति की किरणें मुझसे निकल-निकलकर वातावरण में फैल रही हैं...सारे विश्व की आत्माओं को, मैं शांति का दान दे रहा हूं । सर्वत्र शांति की स्थापना हो रही है । मेरा विश्व शांतिमय बन रहा है।

निशानियां

१. उड़ती कला का अनुभव होता है।
२. हल्कापन अनुभव होता है।
३. निर्विकल्प स्थिति।
४. समर्थ व कल्याणकारी संकल्प ही उठ रहे हैं । सर्व के प्रति शुभ-भावना व शुभ-कामना है।
५. खुशी का अनुभव होता है।
६. एकरस स्थिति अनुभव हो रही (सदा शांति में स्थिति होने का ही संकल्प व सर्व को शांतिदान करने का ही संकल्प हो रहा है ?

शांति में रहना ही हमारा परमधर्म व धारणा है अत: चाहे कुछ भी सहन करना पड़े, समाना पड़े, परंतु शांति में ही रहना है...। □□□

छात्र-जीवन में योग शिक्षा का औचित्य

□ब्र.कु. विमल कुमार श्रीवास्तव , बिलासपुर

आज भ्रष्टाचार एवं अनैतिकता मनुष्य के खून में समा गये हैं। वह अपने और पराये का फर्क तक भूल गया है। इसलिए हर एक गली-कूचे में, हर एक मुहल्ले में, हर एक गांव में, हर एक शहर में, यहां तक सारे विश्व में आज इन दोनों का ही बोलबाला है। भ्रष्टाचार और अनैतिकता से न तो कोई प्रदेश अछूता है, न कोई जाति अछूती है, न धर्म अछूता है। इन दोनों में कौन बड़ा और कौन छोटा है, यह निर्णय करना भी कठिन है। वैसे ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इनमें से यदि एक प्रवेश कर जावे तो दूसरा स्वयं चला आता है। वैसे इनका आपसी सम्बंध पति-पत्नी का है। भ्रष्टाचार पति है और अनैतिकता उसकी पत्नी है।

आजकल इस युगल से बचना बहुत कठिन है। इस पर जीत पाना तो और भी कठिन है। परंतु जो योद्धा बनकर इन पर विजय प्राप्त कर लेते हैं तो महान बन जाते हैं और राम की उपाधि प्राप्त कर लेते हैं। भ्रष्टाचार और अनैतिकता के दोनों के पांच-पांच रूप मिलकर दस सिरवाला सर्वव्यापी रावण कहलाता है जिसे प्रतिवर्ष जलाने के बाद भी वह जिंदा है, क्योंकि अभी राम की सेना (बंदर) तैयार नहीं हुई है, उनके पास इस रावण को मारने की शक्ति का अभाव है।

कहावत है कि बालक बंदर एक समान। अब हर एक शिक्षक को राम बनकर इन बंदरों की सेना में आत्मबल भरना है जिससे बालक बड़े होकर भ्रष्टाचार और अनैतिकता रूपी रावण को मारकर रामराज्य की स्थापना कर सकें और मानव का जीवन सुखी और आनंदमय बन जावे। मुख्य बात है छात्रों में आत्मबल भरने की, पर यह कार्य मात्र नैतिक शिक्षा से सम्भव नहीं है। नैतिक शिक्षा का अर्थ छात्रों को अच्छे गुणों से परिचय कराकर उसके सुपरिणामों को कथा, कहानियां एवं महान नेताओं के जीवन-चरित्र के द्वारा अवगत कराना मात्र ही रहा है। इससे छात्रों का चरित्र निर्माण नहीं हुआ, इसका कारण है शालाओं में योग की शिक्षा का अभाव।

योग की शिक्षा के बिना नैतिक शिक्षा उसी प्रकार अधूरी है जैसे बिना बाण का धनुष। बिना योग की शिक्षा के नैतिक शिक्षा मात्र सिद्धांत बनकर रह गया है। नैतिक शिक्षा का व्यावहारिक जीवन में उपयोग नहीं हो पाया। अब आवश्यकता इस बात की है कि शालाओं में नैतिक शिक्षा के साथ-साथ योग की शिक्षा भी दी जावे।

ज्ञान के बिना योग सम्भव नहीं है और योग के बिना ज्ञान भी सम्भव नहीं है। इसलिए ज्ञान व योग दोनों ही शिक्षा-शालाओं में दिया जावे ताकि ज्ञान अर्थात् नैतिकता को धारण करने की शक्ति योग के द्वारा प्राप्त हो सके। परंतु योग क्या है ? उसके बारे में जानना आवश्यक है। योग पर अनेक शास्त्र लिखे गये हैं।

योग का सामान्य अर्थ है जोड़, मिलन या संबंध। बुद्धि एकाग्र करने के लिए लोग कई विधियां अपनाते हैं और उसे योग की संज्ञा देते हैं। यथा तारे पर बुद्धि टिकाना, पैर के अंगूठे पर ध्यान केंद्रित करना, मूर्तियों पर ध्यान लगाना आदि।

हमें इस सत्यता का ज्ञान तो होना ही चाहिए कि परमात्मा देवों का भी देव है। अत: किसी देवता या देवी को परमात्मा मानना योग का सही आधार नहीं है। उदाहरण के तौर पर कोई साधक राम पर धारणा और ध्यान का अभ्यास करता है। अब उसके मन-चक्षु को भी राम के साथ धनुष-बाण या उनका मुकुट या उनकी पादुकाएं आदि भी साथ दिखाई देंगी। इसी प्रकार यदि कोई ईसा-मसीह का ध्यान करेगा तो वह या तो ईसा को सूली पर चढ़ा देखेगा या अनन्य शिष्यों के साथ। अंग्रेजी भाषा में एक कहावत है कि There is no picture without a back ground अर्थात् हर एक चीज़ की कोई-न-कोई पृष्ठभूमिका अवश्य होती है। अब विचार करने की बात यह है कि वस्त्र, मुकुट, धनुष-बाण, सूली आदि तो सभी प्रकृति ही के दृश्य हैं और वे सभी तो उस महान पुरुष के अतिरिक्त हैं, जिनका स्मरण किया जा रहा है। अत: इस प्रकार के अभ्यास को न तो एकाग्रता कहना उचित है, न ही इसमें अनन्य स्मृति है। यह तो ईश्वरीय योग के सिद्धांतों के प्रतिकूल है। हमारा योग तो एक परमात्मा से ही होना चाहिए।

योग, प्राणायाम और आसनों का नाम नहीं है। योग में प्राणों के पूरक, कुंभकादि का अभ्यास नहीं है जोकि बच्चों के लिए सहज नहीं है। विभिन्न योगों के लिए विभिन्न आसन भी निर्धारित किए गए हैं जो विभिन्न लोगों के लिए भी सम्भव नहीं है। हठयोगी हठक्रिया द्वारा या क्लेशपूर्वक अपने भीतर

प्राण वायु को स्थिर रखने की कोशिश करता है, उसकी इस अवस्था को मूढ़ समाधि कहते हैं। इस अवस्था में न तो विचार रहता है न आनंद ।

इसके विपरीत राजयोग की अवस्था भिन्न रहती है, वह क्लेशपूर्वक ध्यान नहीं करता । बल्कि सुरूचिपूर्वक और सुखमय आसन द्वारा तथा उच्च चिंतन द्वारा मन को एकाग्र करता है, जिस कारण उसकी अवस्था चैतन्य समाधि कहलाती है । यह राजयोग एक ऐसी सर्वश्रेष्ठ विद्या है जिसकी शिक्षा ज्ञानसागर परमपिता परमात्मा शिव स्वयं देते हैं ।

गीता में भगवान के महावाक्य हैं कि—''पहले भी सृष्टि के आदिकाल में, यह योग मैंने सिखाया था । वह कालांतर में प्राय: लुप्त हो गया, अब पुन: इसकी शिक्षा देने के लिए मैं अवतरित हुआ हूं । हे वत्स, जब-जब इस प्रकार धर्म की ग्लानि होती है, तब-तब मैं अवतरित होकर इसकी फिर-से शिक्षा देता हूं परंतु चूंकि मैं साधारण मनुष्य तन का आधार लेता हूं इसीलिए बहुत से देहाभिमानी लोग मुझ अव्यक्त एवं अविनाशी परमात्मा को नहीं पहचान पाते ।''

इन महावाक्यों के अनुसार अब जबकि पुन: संसार में और विशेषकर भारत में पुन: भ्रष्टाचार, अनाचार, मनोविकार, आदि की वृद्धि हो गई है तब पुन: ज्योतिस्वरूप परमात्मा ने साधारण मानवी तन को माध्यम बनाकर प्राचीन ईश्वरीय राजयोग की शिक्षा दी है जिसके बिना मनुष्य का वास एक मरूस्थल संसार में है । अत: सच्चे स्थायी सुख का सार चाहनेवाले योगी बनें और पवित्र बनें । **ब्रह्मलोक के वासी ज्योतिर्बिंदु परमात्मा शिव ही से मनोयोग अथवा बुद्धियोग ही योग है** । ब्रह्मलोक में न तो कोई मुकुट आदि जेवर है, न कोई सूली । वहां तो प्रकाश-ही-प्रकाश है, जिसे ब्रह्म कहते हैं। उस प्रकाश में स्वयं शिव ज्योतिस्वरूप ही है, उनकी स्मृति ही अनन्य एवं अद्वैत स्मृति होगी ।

योगाभ्यास में हमें इस संसार की किसी भी चीज़ को याद नहीं करना है बल्कि ब्रह्मलोक के वासी चैतन परमात्मा ही की मधुर स्मृति में मन को समाहित करना है, जो परमात्मा स्वयं भी एक अनादि, अनश्वर, दिव्य ज्योतिर्मय, परमाणुसम है। उनपर मन टिकाने से हममें ईश्वरीय शक्ति, अनन्य शांति एवं गुणों का संचार होगा और वही योग की श्रेष्ठ प्राप्ति है ।

मनुष्य दिन-प्रतिदिन व्यस्त होता जा रहा है । जहां उसे दम मारने की भी फुर्सत नहीं है वहां भला प्राणायाम या हठयोग के लिए समय ही कहां ? एक तरफ मनुष्य शांति चाहता है, दूसरी तरफ व्यस्तता दिखाता है । ऐसे समय में सर्व का कल्याणकारी पिता परमपिता परमात्मा आकर राजयोग सिखाते हैं, जिसका अभ्यास जो भी चाहे जहां भी चाहे जैसे भी चाहे कर सकता है । उठते-बैठते कार्य व्यवहार में रहते हर समय करनेवाला सर्व योगों का राजा है—''राजयोग ।''

वर्तमान काल में छात्र जीवन भी व्यसनों और विकारों से ग्रस्त है । लोग कहते हैं कि व्यसन एक ऐसी बीमारी है कि जिसका कोई इलाज नहीं है । यह एक बार लग जावे तो मनुष्य के साथ ही जाती है, किंतु ''राजयोग'' एक ऐसी दवा है जो मनुष्य के सभी विकारों और व्यसनों को नेस्तनाबूद करती है । सांप्रदायिकता की भावना समाप्त होगी तथा सभी धर्मों में सहिष्णुता की भावना जागृत होगी ।

राजयोग से निश्चित ही छात्र लाभान्वित होंगे । राजयोग से 'हम आत्माएं भाई-भाई हैं' की भावना जागृत होगी और ऊंच-नीच की भावना समाप्त हो जायेगी । इससे धार्मिक अंधविश्वास समाप्त हो जावेगा और सर्वशक्तिमान परमात्मा से नैतिक गुणों की धारणा करने की शक्ति प्राप्त होगी। योग एक प्रकार से मन, वचन और कर्म का आध्यात्मिक अनुशासन ही है । छात्र-छात्राओं के हित में राजयोग शिक्षा का एक अभिन्न अंग होने की आवश्यकता प्रतिपादित की ही जानी चाहिए। □

नासिक: महानगरपालिका के उपायुक्त भ्राता नारायण राव ढिवरे जी को ब्र.कु. वीना ईश्वरीय सौगात देते हुए।

"हम हैं दाता के बच्चे, मांग कुछ सकते नहीं..."

अपनी राजधानी को हम, हर्गिज भुला सकते नहीं,
जल चुका जो ज्ञान दीपक, अब बुझा सकते नहीं।
कल्प पहले भी सही, असुरों की कड़वी बोलियां,
हंस-हंस के सब सहते रहे, करते रहे अठखेलियां।
माया के सहकर जुल्म को, संगम पे पाया बाप को,
भूल बैठे थे सभी, पहचान हो गयी आपको।
जीतकर माया को हम, मंजिल पे बढ़ते जायेंगे,
स्वर्ग के दिखते नजारे, अब भुला सकते नहीं।
अपनी राजधानी को...

सोने के होंगे महल मेरे, दूध-घी की नदियां,
राज राजेश्वर बनेंगे हम, मिलेगी गद्दियां।
कष्टदायक चीज कोई, स्वर्ग में होगी नहीं,
संकल्प से हो प्राप्ति, होगी मेरी दुनिया नई।
आधे कल्प तक धर्म का, होगा न दुश्मन कोई,
अब तक गंवाया बहुत मैंने, अब गंवा सकते नहीं।
अपनी राजधानी को...

जीतकर माया को हमने, जन्नत की खुशबू पायी है,
ज्ञान की मस्ती हमारी, योग की अंगड़ाई है।
नफ़रत को जीते प्यार-से, सबसे हमारा भाईचारा,
लेना है यदि अब स्वर्ग को, तो नर्क से करना किनारा।
ज्ञान के रतनों से हम, झोली को भरते जायेंगे,
खाई जो ठोकर भक्ति में, अब और खा सकते नहीं।
अपनी राजधानी को...

धर्म का दुश्मन ये रावण, मरने को तैयार है,
जागो हे रूहानी सेना, बाबा की ललकार है।
योग का कवच मेरा, ज्ञान की तलवार है,
है वक्त की नाजुक घड़ी, आगे तो जय-जयकार है।
याद में रहकर सदा, मंजिल पे बढ़ते जायेंगे,
जो कदम आगे बढ़े, पीछे हटा सकते नहीं।
अपनी राजधानी को...

याद में रहकर सदा, कर्म को करते रहो,
आयेगी जो कठिनाइयां, तो प्यार से सहते रहो।
शांति देना, सुख देना, बाप का ही काम है,
इसलिए कल्याणकारी 'शिव' ही उनका नाम है,
काम है जो बाप का, कोई कर सकते नहीं।
अपनी राजधानी को...

देखना श्रीमत् पे चलते, मन न मेरा डगमगाए,
जो है जलते आज मुझसे, कल हमारे गीत गाए।
ऐसा न कोई कर्म हो, जो बाप भी बदनाम हो,
राजधानी भी छुटे मेरी, नाम भी गुमनाम हो।
एकमत होकर के हम, मंजिल को अपनी पायेंगे,
हम है अब दाता के बच्चे, मांग कुछ सकते नहीं।
अपनी राजधानी को...

□□□

□ब्र.कु. ज्ञानचंद वर्मा, गीता पाठशाला,
अकबरपुर (फैज़ाबाद), यू.पी.

सोलापुर सेवाकेंद्र के १३वें वार्षिक उत्सव पर भ्राता रत्नाकर गायकवाड, आई.ए.एस. जिलाधीश अपने विचार प्रकट करते हुए।

रायपुर: लॉयंस क्लब द्वारा गांधी सेवा सप्ताह के अंतर्गत आयोजित सर्वधर्म सम्मेलन में ब्र.कु. उषा जी प्रवचन करते हुए।

हरिनगर (दिल्ली) सेवाकेंद्र द्वारा नांगल राय में प्रदर्शनी का उद्घाटन चौधरी भूपसिंह, स्थानीय काउंसलर कर रहे है।

मदुराई: शांति अभियान के समापन समारोह के अवसर पर निकाली गई शांति यात्रा का दृश्य।

नारायणगढ़: आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए एस.डी.एम. बहिन नवराज नैन जी।

बोकारो: में दुर्गापूजा के अवसर पर चैतन्य देवियों की झांकी तथा प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् बोकारो स्टील कारखाना के मैनेजिंग डायरेक्टर भ्राता एस.आर. रामकृष्णन, सपरिवार ब्र.कु. कुसम तथा सीता के साथ खड़े है।

अजमेर: पुष्कर मेले में आयोजित विकास प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए अजमेर के जिलाधीश भ्राता टी. श्रीनिवासन, अतिरिक्त जिलाधीश भ्राता दिनेश गोयल एवं अन्य। ब्र.कु. चंपा तथा अनुराधा साथ में है।

क्या आत्मा और शरीर दो अलग सत्ताएँ हैं ? स्वयं को शरीर मानने की भूल कैसे हुई ?

□ले. ब्रह्माकुमारी प्रेम, देहरादून

यह कितने आश्चर्य की बात है कि मनुष्य स्वयं अपने बारे में भी पूरी तरह नहीं जानता ! कोई मनुष्य स्वयं को शरीर और प्रकृति से भिन्न एक चेतन शक्ति अर्थात् आत्मा निश्चय करता है और स्वयं को अनादि तथा अविनाशी मानता है और अन्य कोई कहता है कि आत्मा नाम की कोई चीज़ ही नहीं है। वह स्वयं को एक जीवित शरीर ही समझता है और जब तक शरीर है तब तक ही अपना अस्तित्व मानता है।

''क्या सचमुच आत्मा का शरीर से अलग कोई अस्तित्व है भी या नहीं ? यदि आत्मा शरीर से एक अलग चीज है तो स्वयं को देह मानने की भूल कैसे करती है ? हम विवेक द्वारा कैसे मानें कि आत्मा शरीर से एक न्यारी सत्ता है ? क्या हम आत्मा को देख भी सकते हैं ? यदि हाँ, तो फिर आत्मा के बारे में सन्देह और विवाद क्यों बना हुआ है ?'' इन सभी प्रश्नों में से सबसे पहले इस प्रश्न पर विचार कर लेना ठीक होगा कि हम विवेक द्वारा कैसे मानें कि शरीर से अलग कोई आत्मा है ?

प्रकृति से बने हुए यंत्र स्वयं अपने लिए नहीं होते बल्कि अपने से भिन्न चेतन के लिए होते हैं

हम अपने जीवन में प्रतिदिन देखते हैं कि जितने भी जड़ पदार्थ अथवा यंत्र हैं उनका अपने लिए कोई प्रयोजन (Purpose or use) नहीं होता बल्कि वे किसी चेतन के प्रयोग या भोग के लिए ही होते हैं। उदाहरण के तौर पर टेलीफोन स्वयं अपने लिए नहीं है बल्कि चेतन मनुष्यों के प्रयोग के लिए है। टेलीफोन रूपी यंत्र द्वारा बोलने या सुनने वाला मनुष्य उससे **भिन्न सत्ता** है। ठीक इसी प्रकार, मनुष्य के कान और मुखादि इंद्रियाँ भी स्वयं अपने लिए नहीं हैं बल्कि चेतन आत्मा के प्रयोग के लिए हैं और आत्मा की अपनी सत्ता कानों तथा मुख से अलग है।

सभी जानते हैं कि कोई भी मकान, मकान ही के लिए नहीं होता बल्कि किसी चेतन मनुष्य के रहने के लिए होता है। मकान में रखी हुई चारपाई या कुर्सी भी चेतन मनुष्य ही के प्रयोग के लिए होती है। अतः यदि शरीर से भिन्न कोई चेतन सत्ता नहीं है तो शरीर का कोई प्रयोजन ही सिद्ध नहीं होता। जैसे मकान या चारपाई का होना ही सिद्ध करता है कि मकान में रहने वाला अथवा चारपाई पर विश्राम करने वाला इन दोनों से भिन्न कोई चेतन सत्ता (मनुष्य) है, वैसे ही शरीर के अस्तित्व ही से सिद्ध है कि शरीर रूपी मकान में रहने वाला अथवा शरीर रूपी शैय्या में विश्राम करने वाला भी शरीर से भिन्न कोई चेतन है।

मकान में सफ़ाई की जाती है, पंखा चलाया जाता है, बिजली जलाई जाती है या पानी बहाया जाता है किसी चेतन ही के प्रयोग के लिए। ठीक इसी प्रकार, शरीर रूपी मकान में जो श्वास-प्रश्वास क्रिया है, रक्त-संचार है या पाचन अग्नि आदि हैं, वे भी किसी चेतन सत्ता के प्रयोग के लिए हैं। उसी चैतन्य का नाम 'आत्मा' है : जब वह आत्मा इस शरीर को छोड़ जाता है तो श्वास-प्रश्वास क्रिया, रक्त-संचार, पाचन क्रिया आदि बंद हो जाते हैं क्योंकि जिसके लिए वे थे अब वह ही वहाँ से चला गया है। आप ज़रा सोचिये कि जब मकान में रहने वाला ही कोई नहीं है तो पंखा किस प्रयोजन से चले, अग्नि किसके लिए जले, प्रकाश किसके लिए हो ? इसी प्रकार, जब आत्मा ही चली जाती है तो शरीर की सभी क्रियाएँ भी बन्द हो जाती हैं।

यों भी कह सकते हैं कि जब मकान टूट-फूट जाता है अथवा उसमें हवा, रोशनी आदि सुखदायक प्रबंध ठीक नहीं रहते तो मनुष्य मकान छोड़ जाता है। ठीक इसी प्रकार, जब शरीर या इसमें होने वाली आवश्यक क्रियाएँ ठीक नहीं रहतीं तो आत्मा भी इस शरीर को छोड़ जाता है। इन सभी दृष्टांतों से तथा युक्तियों से स्पष्ट है कि आत्मा शरीर से एक अलग चेतन सत्ता है।

भोग्य पदार्थ स्वयं अपने लिए नहीं होते बल्कि चेतन भोक्ता के लिए होते हैं

सभी जानते हैं कि यह संसार भोग्य पदार्थों से भरा पड़ा है। यहाँ अनेक प्रकार के फल-फूल, वनस्पति आदि हैं। प्रश्न उठता है—''क्या यह फल स्वयं अपने लिए हैं ?'' ऐसा तो हम कभी भी नहीं देखते कि फल स्वयं को खा रहे हों या जल स्वयं को नहला कर हर्ष का अनुभव कर रहा हो। बल्कि हम सदा देखते हैं कि कोई चैतन्य ही इन्हें भोगता है। अतः जिस प्रकार प्रकृति के अन्य पदार्थ किसी चैतन्य ही के भोग के लिए हैं; उसी प्रकार

स्वयं शरीर, जो भी प्रकृति ही का बना हुआ है, किसी चैतन्य ही के भोग के लिए है। शरीर द्वारा सुख भी किसी चैतन्य को होता है। और दुःख भी उसी चैतन्य ही को होता है। शरीर के जड़जड़ीभूत होने पर बुढ़ापे का कष्ट भी वह चैतन्य भोगता है और शरीर द्वारा अनेक प्रकार के पदार्थों को भोगकर हर्ष भी आत्मा ही को होता है। शरीर **भोग्य है, भोक्ता** इससे भिन्न है। अतः आत्मा को शरीर से अलग मानना ही युक्ति-युक्त बात है।

शरीर रूपी मोटर का परिचालक होने से आत्मा अलग है

हम रोज़ यह भी देखते हैं कि प्रकृति के बने हुए यंत्र स्वतः ही नहीं चलते। उन्हें चलाने वाला, उनका बटन दबाने वाला, उनमें पेट्रोल या ईंधन भरने वाला, समय-समय पर उनकी सफाई आदि का ख़्याल करने वाला, उनसे भिन्न कोई चेतन परिचालक (Driver) या कर्त्ता (Worker) अवश्य होता है। इसी प्रकार, इस शरीर रूपी मोटर को भोजन रूपी ईंधन देने वाला, भोजन कमाने, बनाने और समय पर खाने का **ध्यान रखने वाला**, इस शरीर रूपी यंत्र या मशीन की सफ़ाई की **सँभाल करने वाला** और इसमें जो अनेक क्रियाएँ होती हैं, उन्हें **चलाने वाला** कोई अलग चेतन ज़रूर है। उसे ही **'आत्मा'** कहा जाता है। मोटर में भी जब **ड्राइवर एक विशेष कल पर दबाव डालता है तो मोटर के सभी कल-पुर्जे स्वतः ही चलने लगते हैं। ठीक इसी प्रकार, आत्मा भी अपनी चेतनता से मस्तिष्क को प्रेरित करके सारे शरीर को चलाती है। शरीर स्वतः ही नहीं चलता रहता।**

इंजिन में जब ईंधन खत्म हो जाता है या होते हुए भी जलता नहीं या शक्ति के रूप में परिवर्तित नहीं होता तब इंजन तो केवल रुक जाता है, वह व्यवस्था को ठीक करने की बात नहीं सोचता बल्कि कोई चेतन सत्ता ही उसकी उस त्रुटि का अनुभव करके उसे ठीक करने की युक्ति को अपनाता है। ठीक इसी प्रकार, मान लीजिए कि मनुष्य को भोजन नहीं मिला या मिला है तो पचता नहीं और शक्ति के रूप में परिवर्तित नहीं होता। तब शरीर से भिन्न कोई चेतन ही भोजन न मिलने की अवस्था में उसको ठीक करने के लिए कोई औषधि-उपचार करता है। अतः स्पष्ट है कि चेतन के बिना तो शरीर चल ही नहीं सकता और शरीर को बनाये रखने तथा सुरक्षित रखने का कोई प्रबंध ही नहीं कर सकता और उसकी गति-विधि को कोई नियंत्रित (Controlled) तथा नियमित ही नहीं कर सकता :

आत्मा मस्तिष्क से भी अलग सत्ता है

विज्ञान के इस युग में बहुत-से लोग कहते हैं कि मनुष्य का मस्तिष्क ही सब कुछ करता है। शरीर को नियंत्रण और नियम में रखने वाला मनुष्य का मस्तिष्क ही है। परंतु आप विचार करने पर इसी निर्णय पर पहुँचेंगे कि यह मान्यता ठीक नहीं है। मस्तिष्क तो आँखों द्वारा भेजे हुए **चित्रों को और कानों द्वारा भेजे हुए ध्वनि-प्रभावों को पकड़ता मात्र है परंतु उनकी व्याख्या (Interpretation) तो आत्मा ही करती है। मस्तिष्क उन प्रभावों के भाव को नहीं जान सकता। मस्तिष्क तो कंट्रोल रूम (नियंत्रणालय) और कंट्रोल के लिए यंत्र है, वह कंट्रोलर नहीं है। कानों द्वारा जो शब्द सुने जाते हैं, उन शब्दों को अथवा ध्वनि को तो मस्तिष्क ग्रहण करता है परंतु उन शब्दों का 'अर्थ' क्या है, उनको बोलने वाले का 'अभिप्राय' क्या है, वह किस 'भाव' को व्यक्त करना चाहता है, इनको समझने वाला तो मस्तिष्क से भिन्न कोई चैतन्य ही है। वही चैतन्य 'आत्मा' है। वह न केवल उन शब्दों या चित्रों आदि का अर्थ और भाव समझती है बल्कि उनका अनुभव भी करती है।**

मुक्ति की इच्छा से सिद्ध है कि आत्मा शरीर और मस्तिष्क से भिन्न है

संसार में हरेक मनुष्य की यह तो इच्छा होती है कि उसे दुःख न हो। विचारवान व्यक्ति तो दुःख से सदा के लिए निवृत्ति प्राप्त करने की इच्छा करते हैं। वे समझते हैं कि शरीर और मस्तिष्क भी आज की दुनिया में दुःख ही के साधन बने हुए हैं। अतः वह इनसे भी छुटकारा पाना चाहते हैं। मुक्ति की इस इच्छा से भी सिद्ध है कि शरीर और मस्तिष्क से भिन्न कोई चेतन और विचारशील सत्ता है जो इनके बंधन से भी छूटना चाहती है। यदि आत्मा नाम की कोई चेतन सत्ता **न होती तो शरीर ही स्वयं से छुटकारा पाने की इच्छा न कर सकता या मस्तिष्क ही अपने से मुक्त होने की कामना न करता।**

पुनश्च, शरीर-रहित मुक्ति की अवस्था की इच्छा से एक तो यह सिद्ध होता है कि शरीर से भिन्न कोई अविनाशी सत्ता है जो कि शरीर के नाश होने पर भी रहती है और दूसरे यह भी सिद्ध होता है कि वह चेतन सत्ता इस शरीर से पहले भी थी क्योंकि इस शरीर से पहले उसने कभी मुक्ति का अनुभव न किया होता तो वह अब भी मुक्ति की कामना न करती, कारण कि कामना या इच्छा सदा उसी पदार्थ या अनुभव के लिए होती है जो पहले कभी प्राप्त था। अतः मुक्ति की इच्छा से यह स्पष्ट है कि शरीर से भिन्न कोई चेतन और नित्य सत्ता है जो शरीर से पहले भी थी और इस शरीर का अंत होने के बाद भी रहेगी।

अब प्रश्न यह है कि यदि सचमुच शरीर से भिन्न आत्मा का अपना नित्य अस्तित्व है तो क्या हम आत्मा को देख भी सकते हैं ? यदि हाँ तो कैसे ? और यदि हम नहीं देख सकते तो क्यों ?

क्या हम आत्मा को देख सकते हैं ?

हम आत्मा को देख सकते हैं या नहीं, इसका उत्तर जानने से पहले हमें थोड़ा-कुछ इस बारे में विचार कर लेना चाहिये कि **'देखना'** किसे कहते हैं। मान लीजिये कि हमारी आँखों के सामने गुलाब का एक फूल पड़ा है। तो हम आँखों द्वारा तो उसके केवल **रूप और रंग** ही को देखते हैं। परंतु केवल इतना देखना या इतना ही प्रत्यक्ष ज्ञान तो काफ़ी नहीं है। बल्कि फूल की सुगंधि भी तो उसकी एक विशेषता होती है। लेकिन हम सुगंधि को तो आँख से देख ही नहीं सकते। उसे तो हम नासिका द्वारा ही ग्रहण कर सकते हैं। अत: इस बात की ओर ध्यान दीजिए कि केवल आँखों द्वारा किसी वस्तु के रूप ही का प्रत्यक्ष करना उस वस्तु को देखने, मानने, जानने या अनुभव करने के लिए सब-कुछ नहीं होता बल्कि हमें नासिका द्वारा उसकी सुगंधि के अनुभव करने से तथा हाथों द्वारा उसकी कोमलता आदि का अनुभव करने से भी उस वस्तु के अस्तित्व का और उसकी विशेषता का भान होता है तथा उस वस्तु का प्रत्यक्ष होता है। फूल की सुगंधि अथवा कोमलता का अनुभव करना भी फूल को एक प्रकार से देखना ही है।

दूसरी बात यह है कि हम आँखों द्वारा जिस रूप का, कानों द्वारा जिस शब्द का, नाक द्वारा जिस सुगंधि का और हाथों द्वारा जिस कोमलता का अनुभव करते हैं, वे तो उस वस्तु के केवल गुण ही हैं, वस्तु तो उनसे भिन्न है। अत: सिद्ध है कि किसी वस्तु के गुणों का प्रत्यक्ष करना ही उसे देखना है और उसके गुणों को देखने अथवा अनुभव करने से ही हम वस्तु के अस्तित्व को प्राय: मान लिया करते हैं। उदाहरण के तौर पर दूध में मिठास रूपी गुण का अनुभव करके हम उसमें चीनी का अस्तित्व मान लिया करते हैं। लोहे में उष्णता का अनुभव करके हम उसमें अग्नि का अस्तित्व स्वीकार कर लिया करते हैं और बिजली के पंखे को चलते हुए देखकर हम बिजली के अस्तित्व को मान लेते हैं।

ठीक इसी प्रकार, हम आत्मा को भी देख सकते हैं। जहाँ इच्छा, विचार, अनुभव, पुरुषार्थ आदि गुण या लक्षण हैं, वहाँ हमें आत्मा का अस्तित्व मानना चाहिए क्योंकि इन गुणों को देखना ही आत्मा को देखना है। ये गुण प्रकृति के किसी भी पदार्थ में हम कभी भी नहीं देखते, अत: जिसमें ये गुण हैं, उसे हमें प्रकृति से एक भिन्न सत्ता, एक चेतन सत्ता अर्थात एक 'आत्मा' मानना चाहिए। इन गुणों के प्रत्यक्ष को हमें आत्मा का प्रत्यक्ष अर्थात आत्मा का दर्शन मानना चाहिए। आत्मा के गुणों को देखकर तो आत्मा को सभी मनुष्य देख सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, अपने आहार-विहार की शुद्धि के व्रत के पालन तथा विकारों की पवित्रता आदि नियमों का पालन करने तथा योगाभ्यास करने से भी हम परमपिता परमात्मा की कृपा से दिव्य दृष्टि द्वारा आत्मा का दिव्य प्रत्यक्ष अथवा साक्षात्कार कर सकते हैं। आत्मा इन प्रकृतिकृत नेत्रों द्वारा देखी जा सकने वाली या अन्यान्य इंद्रियों द्वारा अनुभव की जाने वाली सत्ता तो है नहीं क्योंकि एक तो इन इंद्रियों द्वारा केवल प्रकृति ही के तत्वों का अनुभव हो सकता है जबकि आत्मा प्रकृति से एक भिन्न सत्ता है, दूसरे आत्मा सूक्ष्माति-सूक्ष्म है और हमारी इंद्रियाँ तो कई अत्यन्त सूक्ष्म प्रकृतिकृत सत्ताओं का भी अनुभव नहीं कर सकतीं। और, तीसरी बात यह है कि अनुभव या प्रत्यक्ष करने वाली तो आत्मा ही है, इंद्रियाँ तो साधन हैं। अत: इंद्रियाँ भला आत्मा का क्या अनुभव करेंगी ? आत्मा का साक्षात्कार तो स्वयं आत्मा ही कर सकता है और वह तब कर सकता है जब उसे ज्ञान रूपी दर्पण और योग रूपी सूक्ष्म दिव्य चक्षु प्राप्त हो। लौकिक रीति में भी हमारी आँखें भले ही अन्य वस्तुओं को देख सकती हैं परंतु वे स्वयं को तब देख सकती हैं जब उन्हें कोई दर्पण मिले और आँखें स्वयं भी ठीक अवस्था में हों। इसी प्रकार, जिन मनुष्यों का आत्मिक चक्षु अथवा दर्पण ठीक नहीं है, वे उसके अणु रूप अथवा ज्योति रूप का प्रत्यक्ष तो नहीं कर सकते; हाँ उसके गुणों का प्रत्यक्ष (जैसे कि हम ऊपर बता आये हैं) तो सभी करते ही हैं। कौन है जिसे अपने अस्तित्व का **भान अथवा अनुभव नहीं होता ? 'मैं हूँ'—यह तो सभी कहते और मानते ही हैं। अपने बारे में ऐसा तो कोई भी मनुष्य नहीं कहता कि—'मैं नहीं हूँ' अथवा कि—'मेरा तो अस्तित्व ही नहीं है।' यदि कोई मनुष्य ऐसा कहे भी तो भी उसके कहने से यही सिद्ध होगा कि वह है क्योंकि निज अस्तित्व के बिना तो कोई कुछ कह भी नहीं सकता।**

आत्मा अपने स्वरूप को भूली कैसे और संसार में आत्मा के बारे में मतभेद क्यों हैं ?

अब जहा तक आत्मा के गुणों या लक्षणों अर्थात इच्छा, अनुभव, स्मृति आदि का प्रश्न है, इनसे तो सभी परिचित ही हैं, परंतु आत्मा इस सृष्टि में कहाँ से आई, कब आई, उसने कितने

जन्म लिए, उसके संस्कारों में कब परिवर्तन आया, ऐसे-ऐसे जो प्रश्न हैं, उनके बारे में आज संसार में अज्ञान और वाद-विवाद है। इसका कारण यही है कि आत्मा जन्म-मरण के चक्कर में आने के कारण अपने परिचय को भूल गई है और अशुद्ध वासनाओं तथा संस्कारों के कारण वह स्वरूप-स्थित भी नहीं है। आत्मा के बारे में पूर्ण और यथार्थ परिचय तो केवल एक सत्यस्वरूप, अजन्मा परमपिता परमात्मा ही दे सकते हैं। जब तक वह अवतरित होकर आत्माओं के स्वरूप का, धाम का, आवागमन तथा अवस्थाओं आदि का परिचय न दें तब तक आत्मा को अपने विषय में उपर्युक्त प्रश्नों पर पूर्ण प्रकाश नहीं मिल सकता है। अब परमपिता परमात्मा ने आत्मा की स्वरूप विस्मृति के बारे में निम्नलिखित स्पष्टीकरण दिया है।

जन्म-जन्मान्तर शरीर का संग करने के कारण ही आत्मा अपने स्वरूप को भी भूल गई और आज कई आत्माएँ तो अपने अस्तित्व को भी नहीं मानती। देह के साथ आत्मा का चिरकाल से इतना घनिष्ठ और निकट का सम्बन्ध रहा है और देह द्वारा ही चूँकि उसे सुख-दुःख आदि का अनुभव होता रहा है और देह का भान उसे रहता रहा है, इस अभ्यास से उसने देह के साथ ही तदात्म्य अथवा एकता मान ली है। जैसे कोई राजकुमार शिशु अवस्था में अपने राजमहल और माता-पिता से बिछुड़ जाय और जंगल के भेड़ियों से जा मिले और उनके निरन्तर और चिर-स्थायी संग से स्वयं को भी एक भेड़िया ही मानने लगे, ठीक ऐसी ही स्थिति आज आत्मा की हुई है।

परंतु अब परमपिता परमात्मा शिव पुनः अपना भी परिचय दे रहे हैं और मनुष्यात्माओं के 84 जन्मों के आदि, मध्य और अंत की कहानी भी सुना रहे हैं तथा आत्म-स्वरूप में स्थिति का तथा सम्पूर्ण पवित्रता, सुख और शांति की प्राप्ति की सहज विधि भी समझा तथा सिखा रहे हैं। □

पृष्ठ १२ का शेष

मन को सच्चा आनंद प्राप्त कराने का यह अच्छा माध्यम है। यदि हम अंतर्मुखी व्यक्तित्व को स्थिर, दृढ़ व शांत बना लेते हैं तो हमारा यह स्वरूप लोगों को एक घने वट वृक्ष के समान मानसिक तनावों की तपती धूप से थोड़ी देर के लिए बचायेगा।

अतः हम निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि अंतर्मन के सौंदर्य पर ही बाहरी व्यक्तित्व का निखार निर्भर है। □□□

पृष्ठ १० का शेष

साक्षात्कार तथा समाजसेवा में, अग्रिम स्थान, अपने विश्व-विद्यालय को दिला सकेगी। धर्म, कर्म, व्यवहार और परामार्थ यह सब बातें सिद्ध होंगी और हमें उसका आह्वान करने के लिए अपने-आपको तैयार करना होगा। और यह भी हम सब जानते हैं कि जो लायक बनेगा उसी को प्यारे बाबा की मदद भी मिलेगी। कल्प-कल्प की नूंध हुई है और फिर से हो रही है। तब हम क्यों दो कदम पीछे रहें? □□□

हैदराबाद के महापौर भ्राता के. प्रकाश राओ 'शांति के लिए एक मिनट' फार्म भरते हुए।

फीरोज़पुर कैंट: में 'मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस अपील' अभियान का उद्घाटन करते हुए प्रिंसीपल भ्राता लेखराज जी।

नैया का खवैया कौन ?

□ब्र.कु. आत्मप्रकाश., आबू पर्वत

—:पात्र:—

प्रीति— एम.ए. की छात्रा
जागृति— प्रीति की सखी
माधुरी— प्रीति की मां
संतोष— प्रीति का बड़ा भाई
विजया— संतोष की धर्मपत्नी
आनंद— संतोष का घनिष्ट मित्र (अमेरिका निवासी)

—दृश्य—१—

(प्रीति के कमरे में लाल प्रकाश की किरणें झिलमिला रही हैं, जहां वह बैठकर अपने कल्पना के जगत में खोई हुई है, इतने में प्रीति की मां कमरे में प्रवेश कर रही है)

माधुरी—(शांत स्वर में) बेटी, कौन-से गहरे विचारों में खोई हुई हो ?

प्रीति—(चौंककर)—मां, न जाने क्यों कल की डूबती हुई नैया का दर्दनाक दृश्य बार-बार मेरी आंखों के सामने आ रहा है । अचानक कैसे तूफान से सागर की लहरों में नैया डूब गई और बेचारे सभी मिनटों में मृत्यु के शिकार हो गये । अगर नैया का खिवैया चतुराई-से पतवार सम्भालता तो शायद सभी बच भी जाते... ?

माधुरी—बेटी, वास्तव में नाव में बैठने वालों का भविष्य खिवैया के ही हाथ में होता है । और मैं देख रही थी कि खिवैया नाव चलाने के पहले शराब पी रहा था । अब भला बताओ, शराबी जो खुद को नहीं सम्भाल सकता वो नैया को कैसे सम्भालेगा ?

प्रीति—मां, अपना जीवन भी एक नैया के समान है । जिसे समझदार खिवैया मिलता है, उसकी नैया इस संसार-सागर से सुचारू रूप से पार लग जाती है ।

माधुरी—(सोचते हुए)—बेटी, मुझे सदा यही चिंता लगी रहती है कि मेरी लाडली प्रीति को भी अच्छे कुलवाला, गुणवान खिवैया मिले ताकि जीवनभर सुखी रहे । क्योंकि इस तमोप्रधान दुनिया में ऐसे व्यक्ति मुश्किल से ही पाये जाते हैं ।

प्रीति—मां, आप इतनी चिंता क्यों करती हो, देखेंगे आगे चलकर, मेरी तकदीर में क्या लिखा है ?

माधुरी—बेटी, तुम्हारे पापा अगर जीवित होते तो शायद मैं चिंता से छूट जाती । मैं प्रतिदिन भगवान से यही प्रार्थना करती हूं कि मेरी कन्या को कन्हैया जैसा पति मिले । क्योंकि मैं देखती हूं तुम्हारे चाचा के चारों बच्चियों की हालत क्या हो चुकी है ? एक का तो पति है चरित्र से गरीब, दूसरी का है धन से गरीब । तीसरी बनी है विधवा और चौथी लंगड़ी होने के कारण उसे कोई वरता ही नहीं । बेचारी चारों ही दुख की जेल भोग रही हैं ।

(बाहर से कोई दरवाजा खटखटाता है)

प्रीति—(दरवाजा खोलते हुए)—अरे, जागृति बहन, आप इस समय कैसे आईं... ?

जागृति—आज छुट्टी का दिन है, सोचा, आप से मिल कर कुछ ज्ञान चर्चा करूं।

प्रीति—मेरा भी मन अशांत दु:खी दुनिया को देख-देख कर उब सा गया है। कल की डूबती हुई नाव को देखकर इस दुनिया से वैराग सा आ रहा है। दुनिया में दु:ख ही दु:ख है।

जागृति—इन दु:खों का कारण है मानव के कर्म। जैसा करेंगे वैसा काटना पड़ेगा। आज मानव के हर कर्म में पांच विकार अर्थात् रावण प्रवेश है। अत: पाप कर्म का फल दु:ख रूप में मानव को भोगना पड़ रहा है। हर एक का मन पतित है अत: कर्म भी पतित हो रहे हैं।

प्रीति—इस पतित मन को पावन कैसे बना सकेंगे ?

जागृति—हमारा मन पावन बनता है पतित-पावन निराकार परमपिता शिव की याद से जो राम का भी प्रयायवाची है । इस राम की याद से दिल को आराम मिलता है इसलिए इसे **दिलाराम** भी कहते हैं । इस निराकार राम ने ही हम आत्माओं रूपी सीताओं के दिलों को वर लिया, इसलिए इसे **दिलवर** भी कहते हैं ।

प्रीति—बहन, इस निराकार राम का वास्तविक परिचय कहां मिलेगा ?

जागृति—इसका परिचय आपको ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय

विश्वविद्यालय में मिलेगा, जहां मैं भी हर दिन ज्ञानार्जन तथा राजयोगाभ्यास करने जाती हूं।

प्रीति—क्या आप मुझे भी वहां ले चलेंगी?

जागृति—हां...हां... क्यों नहीं...

(जागृति अपने साथ प्रीति को ब्रह्माकुमारी विद्यालय में ले जाकर वहां उसे परमात्म-परिचय तथा राजयोग की शिक्षा से परिचित कराती है)

प्रीति—जागृति बहन, कितना सुंदर स्थान है यह, कितनी अनुपम शांति की अनुभूति होती है परमात्मा की याद से। आप बहुत किस्मत वाली हो, जो इतने समय से राजयोगाभ्यास करके जीवन में सुख-शांति की अनुभूति कर रही हो।

जागृति—आप भी किस्मत वाली बन सकती हो। किस्मत वाली बनने के लिए सदा अपने से पूछते रहो कि मैं किस मत पर चल रही हूं। जो मनमत या परमत को त्यागकर सदा एक परमात्मा की श्रीमत् पर चलता है, जरूर वह श्रेष्ठ अर्थात् तकदीरवान बनता है।

प्रीति—बहन, मैं भी आज से पक्का वायदा करती हूं कि अपनी जीवन-रूपी डोर शिव परमात्मा के ही हाथ में सौंपकर उसकी ही श्रीमत् पर जीवन भर चलती रहूंगी। प्रतिदिन उसकी ज्ञानपुरली सुनने के लिए सेवाकेंद्र पर जाती रहूंगी।

(दोनों अपने-अपने घर चली जाती हैं)

पर्दा गिरता है

दृश्य-२

(संतोष को उसके मित्र ब्रह्माकुमारी विद्यालय के बारे में कई उल्टी बातें सुनाते हैं। विजया ने उसे जब सुनाया कि प्रीति वहां हर दिन जाती है, तो वह क्रोध में तमतमा गया)

संतोष—(क्रोध से)—प्रीति, मैंने सुना है कि तुम ब्रह्माकुमारियों के पास हर दिन जाती हो, मुझे यह कतई पसंद नहीं है। किसी भी हालत में वहां जाना बंद करना होगा।

प्रीति—(शांत स्वर से)—भैया, वहां तो राजयोगाभ्यास सिखाया जाता है, जिससे मन को अनोखी शांति अनुभव होती है। मैं वहां जाना तो बंद नहीं कर सकती हूं।

विजया—प्रीति बहन, क्या यह उम्र आपकी राजयोग सीखने की है... हम तो आपकी शादी कराके इसे रोकने के झंझट-से सदा के लिए छूट जायेंगे...

प्रीति—भाभीजी, मैं अपनी शादी कर चुकी हूं। मैंने अपनी जीवन-रूपी नैया का खिवैया उस परम सुंदर शिव परमात्मा को बना दिया है...

संतोष—(गुस्से से गरजते हुए)—चुप रहो प्रीति, ज्यादा बकवास मत कर, ये मेरी इज्जत का सवाल है। अगर तुम शादी नहीं करोगी तो जीवनभर मुझे दुनिया वालों के सामने नीचे ही देखना होगा। हर हालत में तुझे शादी करनी ही पड़ेगी।

प्रीति—(धैर्यता से)—भैया, किसी भी कीमत पर मैं इस बात के लिए सहमत नहीं हूं...

संतोष—(झल्लाकर)—देखता हूं मैं, कैसे तुम सहमत नहीं होती... विजया आज से प्रीति को बिल्कुल खाना नहीं देना...

(३ दिन तक खाना न देने पर भी प्रीति पर उसका असर नहीं होता)

(दफ्तर से घर वापस आते समय संतोष के होंठों की मुस्कराहट के पीछे दर्द की लकीर स्पष्ट दिखाई दे रही थी, घर में आते ही वह जोर-से चिल्लाया)

संतोष—बोल, कुलकलंकिनी प्रीति, भूखे पेट मरने के बाद भी नहीं मान रही है मेरा कहना... ऐसे बहन की तो शक्ल भी मैं नहीं देखना चाहता...

प्रीति—कोई बात नहीं, मुझे मेरा प्रियतम तो सदा ही देखता रहता है...

संतोष—(थप्पड़ मारते हुए)—बेशर्म कहीं की, इतनी देर में तो पत्थर कहा जाने वाला दिल भी पिघलकर मोम बन जाता है...

प्रीति—(स्वागत)—आप मेरे तन को मार सकते हैं लेकिन मन को नहीं। मेरा मन तो मेरे मन के मीत से असीम प्यार पा रहा है...

संतोष—(जोर से डंडा मारते हुए)—बोल प्रीति, आखिर तुझे शादी करनी है या नहीं? ब्रह्माकुमारियों के पास जाना बंद करना है या नहीं?

(यह दर्दभरा दृश्य देखकर माधुरी की आंखों से आंसुओं का फव्वारा फूट पड़ा, वह दौड़कर संतोष का हाथ पकड़ने लगी)

माधुरी—(हाथ पकड़ते हुए)—अरे निर्दयी, अभी तो मारना बंद कर, आखिर वह भी तो इंसान है...

(प्रीति के असहनीय हालत को देखकर माधुरी घुनघुन कर रोती रही... बेटी, आज अगर तुम्हारे पिताजी होते तो तेरी ये हालत नहीं होती)

प्रीति—(मां के आंसू पोंछते हुए)—मां, कोई बात नहीं, आप मेरे कारण क्यों दुख उठाती हो?

माधुरी—(रूंधे गले से)—प्रीति, तुम क्या जानोगी मां की ममता को...

संतोष—(तीखी आवाज से)—मां, तुम हट जा यहां से, कैसे भी करके प्रीति का आज मुझे अंतिम फैसला करना ही है... उसकी तो अक्ल बिल्कुल मारी गई...

प्रीति—(आंखों में दो मोती टपकते)—भैया, एक दिलतख्त पर राम और रावण दोनों नहीं बैठ सकते हैं। मैंने अपने दिलतख्त पर अपने निराकार राम को बिठाया है। चाहे मैं मर भी जाऊंगी, लेकिन अंतिम श्वास तक मेरा फैसला यही रहेगा...

संतोष—(बाल खींचते हुए)—बदतमीज कहीं की, तुम पागल हो चुकी हो... निकल जाओ मेरे घर से... तुम्हारे लिए इस घर में कोई स्थान नहीं है...

प्रीति—(गंभीरता से)—भैया, आप मुझे अपने घर से बाहर निकाल सकते हो, लेकिन मेरे दिल-रूपी घर से मेरे प्रियतम को बाहर नहीं निकाल सकते...

संतोष—(घर से बाहर ढकेलते हुए)—तेरी ये मजाल... निकल जा मेरे घर से... चले जाओ, जहां जाना हो...

प्रीति—(स्वागत)—चाहे मुझे कितने भी सितम सहन करने पड़ें, मैं कर सकती हूं, लेकिन मैं प्रियतम को नहीं छोड़ सकती हूं... चाहे मेरे प्राण भी निकल जाएं, लेकिन प्राणनाथ से जुदा नहीं हो सकती हूं... **जिसको राखे साईंयां, मार सके न कोय**...

प्रीति के पांव अंजाने रास्ते पर चल रहे थे और विचार पहचाने रास्ते पर...

पर्दा गिरता है

दृश्य-३

(संतोष का मित्र आनंद अमेरिका (न्यूयार्क) से खास संतोष को मिलने भारत में आया है। शहर में आते ही टैक्सी करके वह संतोष के घर की ओर जाता है तो अचानक उसकी नज़र प्रीति पर पड़ती है। वह टैक्सी रोककर प्रीति से बात करने लगता है)

आनंद—(हर्षोल्लास से)—प्रीति बहन... कहां जा रही हो?

प्रीति—(चौंककर)—अरे आनंद भैया आप! क्या आप अमेरिका से आ रहे हैं? कैसे, ठीक हो... मै जरा किसी काम से अपनी सखी के घर जा रही हूं...

आनंद—(हट से)—अरे बहन, मैं इतनी दूर से खास आप सभी-से मिलने आया हूं... क्या आप वापस घर नहीं चलोगी... आपको मेरे साथ वापस घर चलना ही होगा...

प्रीति—(मजबूरी से)—अच्छा, भैया चलो...

(आनंद प्रीति को टैक्सी में बिठाकर संतोष के घर की ओर चलता है, टैक्सी का हॉर्न सुनते ही संतोष घर से बाहर आता है। आनंद के साथ प्रीति को देखते वह हक्का-बक्का ही रह गया)

संतोष—(प्रीति से नज़र चुराते हुए)—अरे आनंद भैया, अचानक आपका आना कैसे हुआ...

आनंद—(मुस्कराते हुए)—संतोष भैया, अचानक आने में ही मजा आता है...

(कई सालों के बाद हुए मिलन में दोनों भाकी पहनते हैं, दोनों के आंखों से आनंदाश्रु टपकते हैं)

(आनंद माधुरी मां, को देखते ही दौड़कर चरण स्पर्श करता है...)

माधुरी—(प्यार से)—जीते रहो बेटा...

(आनंद का शालीनतापूर्वक व्यवहार देखकर संतोष सहम जाता है...)

आनंद—भैया, भाभीजी कैसे हैं...?

विजया—(दौड़कर आते हुए)—मैं तो बिल्कुल ठीक हूं आनंदजी...

आनंद—(सौगातें दिखाते हुए)—देखो, मैंने आप सभी के लिए कितनी सौगातें लाई हैं, एक सबसे बढ़िया सौगात भी लाई है लेकिन वह बाद में बताऊंगा...

विजया—आनंदजी! ये कौन-सा मैडल लगाया है, आपने शर्ट पर...

आनंद—भाभीजी, सचमुच आप बहुत होशियार हो, यही अनोखा मैडल उस गुप्त सौगात का परिचय करा रहा है...

संतोष—वो कैसे?

आनंद—इस मैडल को हम बैज कहते हैं, ये है ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के नियमित छात्र की निशानी। यह मैडल जो पहनता, वह ही आने वाले स्वर्ग के मॉडल में जाने का अधिकारी बनता है।

(ब्रह्माकुमारी नाम सुनते ही संतोष को शॉक लगता है और प्रीति का मन खुशी में नाच उठता है)

संतोष—ब्रह्माकुमारियां और स्वर्ग ये दो बातें एकसाथ कैसे हो सकती हैं?

आनंद—(खुशी से)—इन ब्रह्माकुमारियों ने तो न्यूयार्क में न्यु पार्क ही बसा दिया है। इस विद्यालय के माध्यम से ही परमात्मा शिव नई दुनिया में स्वर्ग स्थापन करने का महान कर्त्तव्य कर रहे हैं। जन्म-जन्मांतर से रावण की विकारों-रूपी जेल में मुरझाई हुई आत्माओं पर ज्ञान की वर्षा करके, उन्हों के जीवन में नई बहार लाई है। वहां तो बहुत ही सुंदर आत्माओं-रूपी चेतन पुष्पों का बगीचा खिल उठा है। यही संदेश रूपी

सौगात देने मैं खास आया हूं ।

संतोष—(लम्बा श्वास लेते हुए)—आनंद, लेकिन मैंने इन ब्रह्माकुमारियों के बारे में कई गलत बातें सुनी हैं...

आनंद—सुनी तो मैंने भी थीं । लेकिन भैया, सुनने में और वहां जाकर अपनी आंखों से देखकर अनुभव करने में महान अंतर है। "इस महान अंतर को जानने से ही मेरे अन्तर्आत्मा की ज्योति जग गई, जिससे मैंने अनोखी रोशनी पाई ।"

संतोष—(मुस्कान के साथ)—तो जो भी गलत बातें सुनी हैं, क्या वह सब झूठी हैं ?

आनंद—(निश्चय से)—भैया, इसमें कोई शक नहीं है । मैं अपने निजी अनुभव से बताता हूं कि नि:स्वार्थ सेवा द्वारा हर मानव के मन में चरित्रता का बीज बोकर परमात्म-प्राप्ति से जीवन में सच्ची सुख-शांति की अनुभूति कराने वाली संस्था इस दुनिया में और कोई नहीं है ।

संतोष—वहां जाने से आपके जीवन में क्या परिवर्तन आया ?

आनंद—भैया, मेरे पर तो पाश्चात्य-संस्कृति का पक्का रंग लग चुका था, मेरा जीवन तो जैसे कि रसातल पहुंच गया था । लेकिन वहां जाने से सारा रंग-ढंग ही बदल गया । सभी प्रकार की चिंताओं से मुक्ति पाकर सदा खुशी के झूले में झूलने लगा । सचमुच, कितना न शुक्रिया अदा करूं, उस प्राण-प्यारे शिव परमात्मा का ! भैया, रावण ने तो हमारी नैया डुबोई, लेकिन निराकार राम ने उसे बचाई ।

संतोष—(अपराधी भाव से)—आनंद, उस विद्यालय की शाखा इस शहर में भी है, प्रीति वहां नियमित जाती है । लाख मनाने पर भी उसने वहां जाना बंद नहीं किया ।

आनंद—(अचरज से)—अरे प्रीति बहन, सचमुच आप बहुत भाग्यशाली हो । हमें तो दर्शन कराओ यहां के विद्यालय की शाखा का । चलो, हम सभी आज वहां जाकर ज्ञान समझेंगे ।

(प्रीति सभी को अपने साथ आश्रम ले जाती है, वहां ब्रह्मा-कुमारी बहनों द्वारा ज्ञान समझाती है । संतोष के मन पर वहां के पवित्र तथा शांत वातावरण की गहरी छाप लगती है)

संतोष—(आनंद विभोर होकर स्वागत)—यह स्थान कितना सुंदर है । मैंने सोचा भी न था कि इतना अच्छा ज्ञान यहां मिलता होगा । सचमुच लोग महामूर्ख हैं जो शुद्ध, निष्कलंक तथा कोमल हृदय वाली पवित्र बहनों पर उल्टी बातों का लांछन लगाते हैं । मैं तो यहां नियमित आता रहूंगा ।

(संतोष के मानसपटल पर प्रीति के साथ की पूर्व घटना उभर आते ही वह प्रीति के पैरों पर जाकर गिर पड़ा और अपनी भूल के लिए क्षमा-याचना मांगने लगा)

संतोष—प्रीति बहन, आप सच्ची मीरा हो, मैंने आपको बहुत दुख दिया... मुझे मेरा अपराध माफ कर दो ।

(अद्भुत भाव-वेदना से बोझिल था उसका यह स्वर)

प्रीति—(अति मधुरता से)—भैया, वो आपका कुसूर नहीं था, रावण का कुसूर था । बेरहम रावण ने आपके द्वारा मेरी परीक्षा ली, उसमें मुझे पास होना ही था । उससे तो मेरी और भी शिवबाबा के प्रति और लग्न अटूट बन गई । इसलिए मुझे तो आपको ही धन्यवाद देना चाहिए...

संतोष—नहीं बहन, कुछ भी करो, आप मुझे सज़ा दो...

प्रीति—सजा नहीं लेकिन मेरा आप सभी के प्रति यही सुझाव है कि जो ये पांच विकार दिन-रात मानव को लूट रहे हैं उनको मन से निकाल दो और मैं यही चाहूंगी—**बनाओ सभी शिव को नैया का खिवैया । यही मेरी आशा है आपसे मीठे भैया ।।**

संतोष—धन्यवाद आनंद भैया और प्रीति बहन, आपने हमें सत्य ज्ञान दिलाकर हमारी जीवनरूपी नौका को सच्चे और विश्वासपात्र शिव परमात्मा के हवाले कर सुख-रूपी किनारे पर पहुंचाई ।

(बाद में सभी नियमित रूप से सेवाकेंद्र पर जाने लगते हैं) □

पर्दा गिरता है

रांची में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन पार्षद भाता के.के. श्रीवास्तव जी द्वारा किया जा रहा है।

बम्बई (बोरीवली): लायंस क्लब में प्रवचन करती हुई ब्र.कु. दिव्यप्रभा जी।

सोलन: में आध्यात्मिक मेले व विश्वशांति समारोह का उद्घाटन करती हुई विधानसभा स्पीकर बहिन विद्या स्टोक्स।

पुरी: आध्यात्मिक कार्यक्रम में चित्र में (बाएं से) बी.के. निरूपमा, ब्र.कु. संदेशी, ब्र.कु. जगदीशचंद्र, मुख्य अतिथि पंडित सदाशिव रथ शर्मा, मुख्य चरन तथा गोबिन्दाका जगन्नाथ कलचर, पुरी, ब्र.कु. चक्रधारी तथा ब्र.कु. सुधा जी मंच पर विराजमान हैं।

हरिनगर (दिल्ली): भ्राता ए.के. वर्मा न्यूज एडीटर मिड-डे (बाएं से दूसरे) हरिनगर सेवाकेंद्र पर पधारे। वे ब्र.कु. सुंदरलाल जी, ब्र.कु. शुक्ला तथा उनके परिवारजनों के साथ दिखाई दे रहे हैं।

माउण्ट आबू: पुरी के जगत गुरु शंकराचार्य के उत्तराधिकारी जी के पांडव भवन में पधारे। वे दादी चंद्रमणि, ब्रह्माकुमार भ्राता निर्वैर जी तथा ब्रह्माकुमारी रत्नमणि जी के साथ।

ज्ञान ही जीवन को कलात्मक बनाता है

पृष्ठ २१, नवम्बर अंक का शेष

अलग-अलग रूप-रंग, पद (स्तर) व अनेक धर्म वाले व्यक्ति आते हैं परन्तु परमात्मा द्वारा दिए गये आत्मज्ञान व श्रीमत की एक मत ने उन्हें एक मर्यादा व अनुशासन में बांध रखा है। अत: कह सकते हैं कि ईश्वरीय ज्ञान में कुशल प्रशासन-क्षमता व नियंत्रण क्षमता है जिससे बड़े-बड़े क्रांतिकारी, विषयी, व क्रोधी इंसान भी यहां आकर शांति व एकता के सूत्र में बंध जाते हैं। सहज ही उनका जीवन परिवर्तन हो जाता है।

अतत: उक्त बातों का सार यही निकलता है कि ज्ञान को सही अर्थों में समझ लिया जाये तो ज्ञान द्वारा एक अटल-अखंड-सुख-सम्पन्न स्वर्णिम युग का प्रादुर्भाव इस मनुष्य सृष्टि पर अवश्यमेव होगा। □

आध्यात्मिक सेवा समाचार

□ब्र.कु. सत्यनारायण एवं ब्र.कु. लक्ष्मण, कृष्णनगर द्वारा

मुरादाबाद: मुरादाबाद में जन-जन को ईश्वरीय संदेश देने के लिए १८ अक्टूबर से २८ अक्टूबर तक एक विश्वशांति मेले का आयोजन किया गया था । इस मेले का उद्घाटन ज़िलाधिकारी (मुरादाबाद) द्वारा सम्पन्न हुआ । विशाल शोभा-यात्रा के साथ यह मेला प्रारम्भ हुआ । मेले में राजयोग शिविर का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन उ.प्र. के राज्य खाद्यमंत्री भ्राता हुकुम सिंह जी ने किया । इस मेले को सभी धर्म व सभी वर्ग के लोगों ने देखा । हज़ारों की संख्या में लोगों ने राजयोग शिविर से लाभ उठाया ।

मजलिस पार्क (दिल्ली): सेवाकेंद्र की ओर से आयोजित 'शिव दर्शन शांति मेले' का उद्घाटन सात सौ श्वेत वस्त्रधारियों की विशाल शोभा-यात्रा के उपरांत ८ नवंबर को आदर्श व्यापार मंडल के प्रमुख सदस्यों, क्षेत्रीय प्रमुख डॉक्टर अग्रवाल, सेशन जज भ्राता आर.एल. गुप्ता, सीनियर एडवोकेट भ्राता लालचंद वत्स जी की उपस्थिति में देहली ज़ोन की संचालिका ब्र.कु. हृदयमोहिनी जी ने किया ।

११ नवंबर को संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी के मेले में शुभागमन पर बिगुल वादन, शंखध्वनि और पुष्प वर्षा के बीच भ्राता मंगतराम सिंघल तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यापारियों द्वारा स्वागत किया गया ।

इस मेले को हज़ारों लोगों ने देखा, तीन सौ ने योग-शिविर किया । समाप्ति समारोह में क्षेत्र के काउंसलर भ्राता महेंद्र सिंह जी, मानव एकता समागम की अध्यक्षता राधा स्वामी पंथ की माता पुष्पा जी आदि प्रमुख व्यक्तियों ने भाग लिया ।

रायपुर (म.प्र.): लायंस क्लब रायपुर द्वारा 'गांधी सेवा सप्ताह' मनाया गया, जिसके अंतर्गत 'सर्व धर्म सम्मेलन' का आयोजन किया गया था । इस कार्यक्रम में अन्यान्य धर्म के प्रतिष्ठित वक्ताओं के साथ ब्र.कु. ऊषा जी को भी अपना मन्तव्य (आमंत्रित वक्ताओं के सम्मुख) व्यक्त करने के लिए निमंत्रण मिला था । जिसे सभी धर्म के लोगों ने अत्यंत जिज्ञासापूर्वक सुना और सराहा । बाद में आपको लायंस क्लब, रायपुर की ओर से प्रतीकचिन्ह एवं प्रशंसा पत्र भी प्रदान किया गया ।

सोलन (हि.प्र.) सेवाकेंद्र की ओर से ८ नवंबर से ११ नवंबर तक विश्वशांति समारोह का आयोजन किया गया । इस समारोह का उद्घाटन हि.प्र. की विधायक श्रीमती विद्या स्टोकस के द्वारा हुआ तथा सोलन के ज़िलाधीश व अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने इस समारोह में भाग लिया । आध्यात्मिक प्रदर्शनी, चैतन्य देवियों की झांकी ने इस समारोह को और भी आकर्षित बना दिया । उपकुलपति श्री एम.आर. ठाकुर धर्म पत्नी सहित सांस्कृतिक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे ।

सिद्धपुर सेवाकेंद्र की ओर से विश्वशांति के उपलक्ष्य में सिद्धपुर शहर तथा आसपास के गांवों में प्रवचनों के द्वारा अनेक आत्माओं को शांति का संदेश दिया गया । विशेषतौर से लायंस क्लब का इसमें योगदान रहा । स्कूलों, संस्थाओं तथा लायंस, लीओ, जेसीस क्लब में भी प्रवचन हुए । अनेक गांवों में चेतन देवियों की झांकी तथा प्रदर्शनी भी रखी गयी ।

सिवानी मंडी: तोशाम सेवाकेंद्र की ओर से १९ अक्टूबर को सिवानी शहर में प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर लगाया गया । इसका उद्घाटन माननीय एस.डी.एम. (सिविल) सिंगनी ने किया । इस अवसर पर तोशाम, हांसी तथा सिवानी के काफी गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे । इस प्रदर्शनी से ३००० आत्माओं ने लाभ उठाया तथा २५० आत्माओं ने राजयोग शिविर किया । प्रदर्शनी में काफी पत्रकारों ने भी भाग लिया ।

मेरठ: समाचार मिला है कि मेरठ शास्त्रीनगर में विश्वशांति आध्यात्मिक प्रदर्शनी दो दिन के लिए लगाई गयी जहां हज़ारों आत्माओं ने यह प्रदर्शनी देखकर लाभ उठाया । साथ-ही-साथ त्रिदिवसीय योग शिविर का भी आयोजन किया गया । कलजरी गांव में भी आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया ।

अम्बाला कैंट: सेवाकेंद्र की ओर से नारायणगढ़ तहसील में एक बहुत बड़ी धर्मशाला लेकर ८ दिन की प्रदर्शनी लगाई गयी जिसका उद्घाटन एस.डी.एम. बहन नवराज जी के द्वारा हुआ । यह प्रदर्शनी वहां की जनता के साथ-साथ आसपास के गांवों के निवासियों ने भी देखी । नारायणगढ़ में स्थाई सेवाकेंद्र खोलने का निमंत्रण भी मिला है।

आगरा सेवाकेंद्र की ओर से धौलपुर के 'सरद मेले' में 'चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया । जिसको लगभग ५५०० आत्माओं ने देखा । यह प्रदर्शनी एक सप्ताह तक लगाई गयी । सारी व्यवस्था नगरपालिका की तरफ से की गई । इसका उद्घाटन जिलाधिकारी राजेंद्र प्रसाद माथुर जी ने किया । तीन दिन का योग-शिविर भी रखा गया।

भरतपुर: सेवाकेंद्र की ओर से एक विशाल ग्रामीण मेले में योग-शिविर व आध्यात्मिक ज्ञान एवं ग्रामोत्थान चित्र प्रदर्शनी एक सप्ताह के लिए लगाई गयी जिसका उद्घाटन श्रीमती मीनाक्षी हूजा,

जिलाधीश भरतपुर ने किया । प्रदर्शनी के द्वारा लगभग ५० हजार आत्माओं को ईश्वरीय संदेश दिया गया।

हैदराबाद सेवाकेंद्र से सम्बधित करीमनगर उपसेवाकेंद्र की ओर से ५० किलोमीटर की दूरी पर जगत्थाल तालुका में आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी द्वारा मंदिरों में हज़ारों आत्माओं को ईश्वरीय संदेश दिया गया । इसके अलावा कोरला गांव में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । कला भारती हाल में इंदिरा गांधी के बलिदान दिवस पर शांति कार्यक्रम आयोजित किया गया।

रूद्रपुर समाचार मिला है कि रूद्रपुर शहर तथा आसपास के गांवों में १० प्रदर्शिनयां की गईं । इंद्रा कॉलोनी व पंतनगर में गीता पाठशालाएं खोली गयीं । जहां पर नित्यप्रति सतसंग का कार्यक्रम चल रहा है।

चालीस गांव: विश्वशांति अभियान के अंतर्गत चालीस गांव में लक्ष्मीनारायण की चैतन्य झांकी नगर के प्रमुख रास्तों से निकाली गयी. विश्वशांति के लिए नारे लगाये गए । रात्रि को आध्यात्मिक प्रोग्राम का आयोजन ए.बी. हाईस्कूल में रखा गया । इसके अलावा वाडे गांव में आध्यात्मिक प्रोग्राम द्वारा वहां की जनता को ईश्वरीय संदेश दिया गया ।

सहारनपुर सेवाकेंद्र की ओर से गोधाल के विशाल मेले में एक पंडाल लेकर दस दिन के लिए चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन उ.प्र. के सिंचाई राज्यमंत्री भ्राता श्री भोलाशंकर मौर्य ने किया। इस अवसर पर ज़िलाधिकारी श्री मिश्रा जी, विधायक श्री कपिल जी, विधायिका शकुंतला देवी व नागला क्षेत्र के विधायक श्री चमन जी व बहुत से प्रशासनिक व पुलिस अधिकारी व अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। इस आध्यात्मिक प्रदर्शनी द्वारा कई हज़ार आत्माओं को ईश्वरीय संदेश मिला।

मिरज़ापुर समाचार मिला है कि राजकीय विकलांग कर्मशाला, संगमोहल्ल मिरज़ापुर के प्रांगण में आध्यात्मिक प्रवचन व प्रोजेक्टर शो का कार्यक्रम रखा गया । उपस्थित कर्मशाला के कर्मचारियों व विकलांगों को शांति का संदेश दिया गया । इसके अलावा बिन्नानी डिग्री कॉलेज, राजकीय महिला जूनियर ट्रेनिंग कॉलेज के प्रांगण में भी आध्यात्मिक प्रवचन व प्रोजेक्ट-शो का कार्यक्रम रखा गया । शांति शोभा-यात्रा द्वारा तथा शाम को आश्रम के प्रांगण में शांति समारोह द्वारा जन-जन को ईश्वरीय संदेश मिला ।

रायगढ़ समाचार मिला है कि एक विशाल शांति समारोह का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन भ्राता पी.के. दास कलेक्टर रायगढ़ द्वारा सम्पन्न हुआ । इस समारोह में करीब ५०० आत्माएं पधारीं जिसमें अधिकांश डॉक्टर्स, वकील, उद्योगपति, ऑफिसर्स थे । 'पीस अपील' का संदेश अनेक स्कूलों व ग्रामों में दिया गया ।

सोलापुर सेवाकेंद्र की ओर से सेवाकेंद्र का १३वां वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया । सार्वजनिक समारोह में भी अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया । इस अवसर पर यहां के असिस्टैंट कमिश्नर भ्राता जी.एस. फुंडीपल्ले तथा भ्राता श्रीराम सावंत बी.ई. (सिविल) अधिकारी अभियंता मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे । इस कार्यक्रम के उद्घाटक भ्राता रत्नाकर गायकवाड जी ज़िलाधिकारी सोलापुर, थे । अध्यक्ष भ्राता विनायक राव पाटिल थे । इस प्रोग्राम से अनेक आत्माओं को ज्ञान लाभ हुआ ।

मणिनगर (अहमदाबाद): समाचार मिला है कि अंतर्राष्ट्रीय शांति वर्ष के अंतर्गत शहर के प्रसिद्ध गीत-संगीत कलाकारों के सहयोग से टाउनहाल में एक 'शांति संगीत संध्या' का बहुत ही सुंदर आयोजन किया गया था जिसमें नृत्य क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति पाये हुए कलाकार उपस्थित थे । शहर के अन्य संगीत क्षेत्र के नामीग्रामी व्यक्तियों द्वारा शांति आध्यात्मिक गीतों के कार्यक्रम से अनेक आत्माओं ने लाभ लिया ।

कटक कॉलेज स्क्वायर सेवाकेंद्र की ओर से चरित्र निर्माण आध्यात्मिक संग्रहालय के तृतीय वार्षिकोत्सव एवं स्वर्ण जयंति के उपलक्ष्य में जन-जन को संदेश देने हेतु विभिन्न कार्यक्रम हुए । सर्वप्रथम प्रेस काफ्रेंस का आयोजन किया गया इसमें ६९ पेपर्स के रिपोर्टर और रेडियो रिपोटर ने भाग लिया । चित्र प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, ३५ विद्यार्थियों ने भाग लिया, ४ को पुरस्कार दिये गये । इसके अलावा स्थाई शांति मंडप का नव निर्माण संग्रहालय की छत पर किया गया जिससे जनता काफी लाभ ले सके । मानव का भविष्य महासम्मेलन का उद्घाटन उड़ीसा विधानसभा के स्पीकर भ्राता बी.के. दास जी ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया । इस शुभ अवसर पर अनेक अतिथिगण भ्राता गिरधर जी, समाज कल्याण मंत्री भारत सरकार, भ्राता सरद जी, सांस्कृतिक योजना मंत्री, भ्राता जगदीशचंद्र जी, ब्र.कु. चक्रधारी जी दिल्ली से पधारकर काफ्रेंस को सफल बनाने में सहयोग दिया ।

पुरी विश्वशांति वर्ष तथा स्वर्ण जयंति के उपलक्ष्य में पुरी में विश्वशांति सम्मेलन यहां के काफ्रेंस हॉल में किया गया जिसका उद्घाटन मुख्य अतिथि उड़ीसा के श्रममंत्री भ्राता भोपालचंद महापात्र जी तथा सम्मानीय अतिथि भ्राता श्री युक्त गदाधर आचार्य, ए.डी.एम. पुरी ने भाग लिया । इसमें मुख्य प्रवक्ता भ्राता जगदीश जी ''राजयोग द्वारा विश्वशांति'' ब्र.कु. चक्रधारी जी ने ''शांतिपूर्ण सामाजिक जीवन'' के ऊपर अभिभाषण किए । भ्राता जगदीश जी तथा ब्र.कु. बहनें पुरी के गणपति महाराजा से भी मिले और उन्हें ईश्वरीय साहित्य भेंट किया । आश्रम में पुरी के कई महंतों, मठाधीशों को लेकर ''सर्व धर्म समन्वय'' सभा का आयोजन किया गया जिसमें कई विद्वान पधारे । शिक्षाविद सम्मेलन में उपकुलपति (जगन्नाथ

संस्कृत यूनिवर्सिटी) ने अतिथि के रूप में भाग लिया । अनेक कॉलेजों के अध्यापकगण व प्रवक्तागण इस अवसर पर पधारे ।

भावनगर सेवाकेंद्र द्वारा गोल्डन जुबली को लक्ष्य में रखकर ५०-५० कार्यक्रमों को पूरे करने के उमंग-उत्साह को बढ़ाते हुए सेवा की गयी । माज़ीराम गर्ल्स हाईस्कूल, नवचेतन हाईस्कूल, क्षत्रिय कन्या विद्यालय, आदर्श कॉलेज और चार विद्यार्थी छात्रालयों और शहर के विविध क्षेत्र में प्रवचनों के १० कार्यक्रम हुए जिनसे १००० से अधिक आत्माएं ईश्वरीय संदेश से लाभांवित हुईं । अनेक गांवों में ग्राम प्रदर्शनी व चेतन देवियों की झांकी सजाई गई । योग-शिविर द्वारा भी अनेक आत्माओं की सेवा हुई ।

रांची रांची से चार किलोमीटर दूर चुटिया स्थित 'राम मंदिर' में कन्याओं के अखंड रामायण पाठ के आयोजन के बीच 'हनुमान दल सतसंग सभा' चुटिया के सदस्यों के निमंत्रण पर उनके पण्डाल में उपस्थित लगभग ४०० सतसंग प्रेमियों के मध्य ब्र.कु. बहनों का प्रवचन हुआ ।

बम्बई (घाट कोपर) सेवाकेंद्र से समाचार मिला है कि घाट कोपर तथा उनसे संबंधित सेवाकेंद्रों के भाई-बहनों ने २८ दिन के लिए पदयात्रा का कार्यक्रम आयोजित किया । यह पदयात्रा घाट-कोपर सेंटर से प्रारम्भ की गयी । रोज़ रेगुलर चलने वाले करीब ६५ थे और बीच-बीच में चलने वाले मिलकर रोज़ १००-१२५ के बीच पदयात्री होते थे । इस अनोखी शांति पदयात्रा का अनेक स्थानों पर ज़ोरदार स्वागत हुआ, अनेकों प्रोग्राम जगह-जगह पर रखे गये । यह पदयात्रा जनता के आकर्षण का एक केंद्र बन गयी । जिधर से यात्रा गुजरती थी लोगों की विशाल भीड़ जमा हो जाती थी । इस तरह कई लाख आत्माओं को प्रभु का संदेश मिला ।

भुवनेश्वर शांति अभियान का समापन समारोह १७ अक्टूबर को स्थानीय कस्तूरबा नारी महल के सभागार में शांतिपूर्ण रूप से सम्पन्न हुआ । इसमें उड़ीसा के कृषि व सहकारी मंत्री भ्राता रासबिहारी बेहरा एवं हरिजन व आदिवासी मंत्री भ्राता भजमन बेहरा

नवरात्रि महोत्सव पर धोराजी सेवाकेंद्र द्वारा आयोजित नवदेवियों की चेतन झांकी का उद्घाटन नगरपालिका के पूर्व प्रमुख भ्राता सूर्यकांत भाई जी कर रहे हैं।

ने विशेष अतिथि रूप में पधारकर इस अनूठे शांति अभियान की सफलता पर हार्दिक उद्गार व्यक्त किए । उड़ीसा के अतिरिक्त महाडाकपाल भ्राता बी.के. महांति अतिथि के रूप में पधारे । भुनेश्वर आर्यसमाज के सचिव प्रियव्रतदास जी जिन्होंने अपनी पिछली भ्रांतियों के निवारण पर प्रकाश डालते हुए ब्र.कु.ई.वि.वि. की सराहना की तथा विश्वशांति अभियान की प्रशंसा की ।

सम्बलपुर समाचार मिला है कि अंतर्राष्ट्रीय शांति वर्ष के उपलक्ष्य में जन-जन को शांति का संदेश देने के लिए शहर के बीच में एक शांति समारोह का आयोजन किया गया। ''कल का डाकू आज का राजयोगी'' विषय पर भ्राता पंचम सिंह जी ने अपने अनुभवयुक्त विचार जनता के समक्ष रखे । ४०० कैदियों के बीच भी आध्यात्मिक प्रोग्राम रखा गया । रेडियो प्रोग्राम द्वारा भी ईश्वरीय सेवा की गयी । प्रदर्शनी व योग-शिविर द्वारा लोगों की सेवा की गयी ।

बड़ौदा सेवाकेंद्र की ओर से विश्वशांति अभियान की बड़ौदा के मेयर डॉ. जतीत भाई मोदी ने शुरुआत की । कांग्रेस (आई) के प्रमुख और सूर्यवंशी मराठा समाज के प्रमुख भ्राता गणपत भाई मराठा भी पधारे थे । सब्ज़ी मार्किट के पास मुख्य गुरुद्वारे में विश्वशांति पर प्रवचन हुआ । जामा मस्जिद में भी शांति पर प्रवचन हुए । इस तरह शांति का अभियान बड़े ज़ोरो-से शुरू किया गया । जगह-जगह पर जाकर शांति में रहने का महत्व समझाया गया ।

अमरावती समाचार मिला है कि विश्वशांति अभियान के अंतर्गत सेवाकेंद्र की ओर से सेवा के लिए सबसे पहले सभी स्कूलों के हेडमास्टर, प्रिंसीपल, प्रोफ़ेसर्स-अध्यापकगणों को आश्रम पर बुलाकर शांति अभियान का महत्व समझाया गया । लगभग २५ स्कूलों में बच्चों के सामने प्रोग्राम रखा गया । जेल में कैदियों को भी विश्वशांति के लिए सहयोग देने के लिए कहा गया ।

तीनसुकिया समाचार मिला है कि तीनसुकिया में 'विश्वशांति स्वर्णिम मेला' का आयोजन ७ नवंबर से १४ नवंबर तक किया गया। इस मेले का उद्घाटन आई.ओ.सी. के जनरल मैनेजर भ्राता बी.एन. दत्त जी द्वारा ५० दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया।

१४ तारीख को मेले का समाप्ति समारोह व स्वर्ण जयंति समारोह आयोजित किया गया जिसमें असम व नागालैंड के भूतपूर्व चीफ जस्टिस तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के भूतपूर्व वाइस चांसलर मि. एस.के. दत्ता ने भाग लिया। इस मेले को लगभग ९५ हज़ार आत्माओं ने देखा, ४०० आत्माओं ने राजयोग शिविर किया जिसमें लगभग ४० आत्माएं प्रतिदिन क्लास कर रही हैं।

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित सेवाकेंद्रों से भी उत्साहवर्द्धक समाचार प्राप्त हुए हैं।

ज़गाधरी, सिवनी, धर्मशाला, सेन्धवा, लखनऊ (पेपर मिल), नवरंगपुरा, फिल्लौर, परतवाड़ा, सीरसी, वास्को-डगामा, जूनागढ़, सतना, बिलीमोरा, फीरोजाबाद, नवसारी, खंडवा आदि-आदि। □

जगदीश चंद्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, बी 9/19 कृष्णनगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ओमशांति प्रेस, कृष्णनगर दिल्ली-51 से छपवाया
Regd. No. 10563/65-D. (E)—70